राजस्थान के सांस्कृतिक लोकगीत

संपादिका एवम् अनुवादिका

पद्मश्री लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत

चित्र मुख पृष्ठ-पद्मश्री कृपालसिंहजी शेखावत

चम्पालाल रांका एण्ड कं०

धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता

जयपुर-302003 फोन : 75241

आत्म निवेदन

लोक साहित्य में लोकगीतो का अपना एक विशिष्ट स्थान है, उनका अपना समाज मे एक महत्व है। इनके पीछे एक संस्कृति है जिसकी झाकी कदम कदम पर लोकगीतो मे होती है। विशेष कर ये लोकगीत महिलाओं द्वारा रचे गये होते हैं और ज्यादातर उन्ही के द्वारा गाये जाते रहे हैं। जीवन मे इनका अपना प्रभाव पडता रहता है। गर्भावस्था से लेकर प्रसव, जन्म, मुडन, विवाह, विदा, आगमन, प्रस्थान, गृहस्थ जीवन, दांपत्य, सुख के क्षण, दुख की ज्वाला, सयोग, विरह आदि सभी पहलुओ पर एक मार्मिक अभिव्यक्ति की गई है।

यो लोकगीतो पर कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। परन्तु इनका एक अथाह खजाना बिखरा पडा है। इसका थोडा सा अश ही प्रकाश मे आया है। दिन दिन समय की गति के कारण इनका ह्रास तेजी से हो रहा है। इन्हे सुरक्षित करना आज का बडा काम है मैंने इसी दृष्टि से इस क्षेत्र मे कुछ कार्य करने की कोशिश की है। पहले मेरी एक पुस्तक "राजस्थानी लोकगीत" कई वर्षो पहले प्रकाशित हो चुकी है। पाठको ने इसे बडा पसद किया। तभी मैंने सोचा पुस्तक रूप मे अन्य लोकगीत जो मेरे पास है उन्हें गुण ग्राहको के समक्ष पेश करू।

परन्तु अन्य कार्यों म व्यस्त होने के कारण नही कर पाई। अब मै 'राजस्थान के सास्कृतिक लोकगीतो' के नाम से पाठको के सम्मुख यह प्रस्तुत कर रही हू। साथ ही दूसरी पुस्तक "रजवाडी लोकगीत" शीघ्र ही प्रेस मे देने जा रही हू।

केवल इसी उद्देश्य से दोनो पुस्तको मे अपने सग्रहित लोकगीत दे रही हू कि जिव्हा पर बिखरे धन को नष्ट होने से बचाया जा सके।

विनीत
लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत

ज्ञातव्य बातें

राजस्थानी मे स्त्री-पुरुषो, पति-पत्नी एव प्रेमी-प्रेमिका को निम्नांकित नामो से पुकारा जाता है ।

अडवीला	अनोखा कवर जी	अलबेलो
अलवलियो	अलवलियो असवार	अन्तर कपटी
आलीजो	आलीजो भवर	आंटीलो
अधारा घर रो चानणो	ईसर	उद्याछलो
उमराव	उलझ्यो रेशम	ऊगतो सूरज
अचपळो	कन्थ	कमधजियो
कामणगारो	केसरियो	केसर रो क्यारो
केसरियो बालम	कोडीलो	कवर जी
ख्यालीडो	गढपतिया	गाढा मारूजी
गायडमल	गाहड रा गाडा	गुमानीडो
गोरी रो सायबो	गोरी रो बालमो	गोरी रा सूरज
गोरी रो सूरज	घण जाण	घण हेताळु
घरमड	घतर	चतुर सुजान
चितोडो	घुडला रो सिणगार	छैल भवर
छैलो	जलाल	जलालो बिलालो
जलामारू	जसलोभी	जलो
जालम जोध	जोडी रा भवरा	जोडी रो वर
जोडी रो जलो	जोडी रो जोधो	झिलती जोड रो
झुकता बादल	ढोला	दिन दुल्हा
दिल जानी	दिसडी रा दिवला	दुनिया रो दीपक
दुसमणां रो साल	देसोती	धव

घणी	घणवाला	घण रो सायबो
धीगड मल्ल	नटवरियो	नवल बनो
नैंणा रो लोभी	नोखीलो	प्यारो
पना मारू	परणियो	परण्यो स्याम
पातळियो	पावणा	पिया
पिव	पीवल प्यारी रा ढोला	पीतम
फहर तो फौजा रा माभी	फूटरमल	फूल गुलाब रा
फूला रो भारो	फौजा रा लाडा	फौजा रो माभी
वरसतो बादल	बरसालू बादल	बालमो
बाईजी रो वीर	बाकडल्या मूछा रो	बाकडली मूछा रो ढोलो
बिलालो	जलाल	बीमलिया नैंणा रो
भरतार	भरजोडी रो	भालाळो
भोळी बाई रो बीर	भोळो भवरो	भवर
मतवाळो	मदछकिया	मदवा मारूजी
मन बसियो	मनभरियो	मन मेळू
मरद मूछालो	मस्ताना कवरजी	माटी
माथा रो मोड	मान गुमानी ढोला	मारूजी
माणीगरा	माणेस	मिजलस रा माभी
मिजाजी ढोला	मिरगानैंणी रो बालमो	मिसरी रा कुंभा
मीठा मारू	मीठा मैमान	मुरधरियो
मूछालो	मूधा राज	मेवाडा
मेवासी	मेवासो ढोलो	मोट्यार
मोटाराजवी	मौजी सायबो	रजिया
रणरसियो	रणबको	रसियो
राईवर	राज	राजा
राजन	राजाणी	राजकवर
राजिन्द	राजीडा	रायजादो
रावतियो	रीसालू	रूडाराज
रग भीनो	रग रसियो	रगीलो
रग दूल्हो	लळवळियो	लसकरियो
लहर लोभी	लाखां रो लोडाउ	लाखा रो लहरी
लागणिया नैंणरो	लाडा	लाडो

लाल नणद रो वीर	व्हालो	वना
वर	वादीलो	वींद
स्याम	नणद रो वीर	सरदार
साजन	सायबो	सावणिया रो मेह
सासू सपूती रा पूत	सासू सपूती रा जोध	सासू सुगणी रा पूत
साहिबो	साइनो	सावण रो सिणगार
सावळियो सिरदार	सांवळिया	सिरदार
सिर रो सेवरो	सीगडमल्ल	सुगणा साहिब
सुगणो	सेलाणी भवरो	सेजा रो सवादी
सैंण	सैनीवाळो	सैणाळो
सैंणा रो सेवरो	सैंणा रो लोभी	सोजतियो सिरदार
हगामी ढोलो	हठीलो	हरियाळो
हिवडा रो जिवडो	हेताळू	हेम जडाऊ
हसला हाथी रा ढाला	हजा	हजा मारू

स्त्री

अपछर	अलबेली	अबला
अरधगी	अस्तर	आभारी बीज
आभा बीजळी	अपछरा	कामणी
कामणगारी	कामणी	कीरत्या रो भूमको
कू भवच्चा	केळुकाब	खजन नैणी
गुललजा	गुलहजा	गेंद गुलाल
गौरी	गौरगिया	गोरल
घर री नार	चाळा गारी	चिनाम री पूतळी
चित हरणी	चित चोर	चीतालकी
चूडाहाळी	चदमुखी	चदावदनी
छदगाली	छोटा लाडी	जगमीठी
जगव्हाली	जुवती	जोरावर लाडी
भीला लकी	डावर नैणी	ढेल
तिरिया	तीखा नैणा	दारा
धण	नखराळी	नवलवनी
नाजकवनी	नाजो	नाजुकडी सी नार

नाजुकडी	नानकडी नार	नार
नारो	नितवण	नेनकडी नाजू
प्यारी	पदमण	पदमणी
परणी	पराण पियारी	पातळ पेटी
पातळडी	पातुडी	पिक बैणी
पूगळ री पदमणी	पून्यू रो चाद	फूतळी
फूलवती	बहू	बागा री कोयळडी
बादळ वरणी	बाला	भाम
भामण	भारज्या	महला
मारवण	मारवणी	मारू
मारूणी	माणणी	मिजाजण गोरी
मिरगा लोचनी	मिरगा नैणी	मीठा बोली
मीठा मरवण	मूध	मेवासण
मोवनी	मोटा घर की नार	मदगत
रमणी	रायजादी	रगभीनी
रगरेळी	रगीली	रभालाडी
लाडो	लाडोसा	लुगाई
वनता	बनी	
वलभा	वाम	वीनणी
सदा सुवागण	सायधण	सायजादी
सारग वैणी	सावणगड री तीजणी	सारग नैणी
सावण री तीज	सुगणी	सुवागण
सुगणी नार	सुन्दर	सुन्दर गोरी
हरियाळी	हिरणाखियां	हजा
हसहाळी		

निम्नलिखित श्री जहूर खा मेहर के द्वारा सग्रहित किये गये हैं।

अतरियो बनडो	अधारै घर रो पायणो	अलबलियो असवार
आखडल्यां रो ठार	आतमा रो आधार	ऊगता भाण
ऊगतै सूरज रो तेज	ऊजळ दतो	कानूडो
कान कवर सा	काया री कोर	
काळजै री कूप	केळू री काब	केळू री पाख
केसर बरणो	केसरियो भरतार	कोटडिया रो रुपक

लाल नणद रो वीर	व्हालो	वना
वर	वादीलो	वीद
स्याम	नणद रो वीर	सरदार
साजन	सायबो	सावणिया रो मेह
सासू सपूती रा पूत	सासू सपूती रा जोध	सासू सुगणी रा पूत
साहिबो	सांइनो	सावण रो सिणगार
सावळियो सिरदार	सांवळिया	सिरदार
सिर रो सेवरो	सीगडमल्ल	सुगणा साहिब
सुगणो	सेलाणी भवरो	सेजां रो सवादी
सैण	सैलीवाळो	सैणाळो
सैणा रो सेवरो	सैणा रो लोभी	सोजतियो सिरदार
हगामी ढोलो	हठीलो	हरियाळो
हिवडा रो जिवडो	हेताळू	हेम जडाऊ
हसला हाली रा ढोला	हजा	हजा मारू

स्त्री

अपछर	अलबेली	अबला
अरधगी	अस्तर	आभारी बीज
आभा बीजळी	अपछरा	कामणी
कामणगारी	कामणी	कीरत्या रो झूमको
कू झबच्चा	केळुकाब	खजन नैणी
गुललजा	गुनहजा	गेंद गुलाल
गौरी	गौरगिया	गोरल
घर री नार	चाळा गारी	चित्राम री पूतळी
चित हरणी	चित चोर	चीतालकी
चूडाहाळी	चदमुखी	चदावदनी
छदगाली	छोटा लाडी	जगमीठी
जगव्हाली	जुवती	जोरावर लाडी
झीला लकी	डावर नैणी	ढेल
तिरिया	तीखा नैणा	दारा
घण	नखराळी	नवलवनी
नाजकबनी	नाजो	नाजुकडी सी नार

नाजुकडी	नानकडी नार	नार
नारो	नितवरण	नैनकडी नाजू
प्यारी	पदमरण	पदमरणी
परणी	पराण पियारी	पातळ पेटी
पातळडी	पातुडी	पिक बैणी
पूगळ री पदमणी	पून्यू रा चाद	फूतळी
फूलवती	बहू	बागा री कोयळडी
बादळ वरणी	बाला	भाम
भामरण	भारज्या	महता
मारवरण	मारवणी	मारू
मारूणी	मारणी	मिजाजरण गौरी
मिरगा लोचनी	मिरगा नैणी	मीठा बोली
मीठा मरवरण	मूध	मेवासरण
मोवनी	मोटा घर की नार	मदगत
रमणी	रायजादी	रगभीनी
रगरेळी	रगीली	रभानाढी
लाडो	लाडोसा	लुगाई
वनता	बनी	
वलभा	वाम	वीनणी
सदा सुवागरण	सायधरण	सायजादी
सारग बैणी	सावणगड री तीजणी	सारग नैणी
सावण री तीज	सुगणी	सुवागरण
सुगणी नार	सुन्दर	सुन्दर गौरी
हरियाळी	हिरणाखिया	हजा
हसहाळी		

निम्नलिखित श्री जहूर खा मेहर के द्वारा सग्रहित किये गये हैं।

अतरियो बनडो	अधारै घर रो पावणो	अलबलियो असवार
आखडल्या रो ठार	आतमा रो आधार	ऊगता भाण
ऊगतै सूरज रो तेज	ऊजळ दतो	कानूडा
कान कवर सा	काया री कोर	
काळजै री कूप	केळू री काब	केळू री पाल
केसर बरणो	केसरियो भरतार	कोटडिया रो रूप

कोडीलो	खावद	गसारी रा प्राण ग्राधार
गाडाळ	गायड रो गाडो	गुडळो वादळ
गोपिया मांयलो कान्ह	घर रो ग्राधार	घर रो धणी
चत्तर रो चांद	छैल छबीलो	जीव री जडी
जोडी रो भरतार	जोवन रो जोड	तन रो ताईतियो
तारा बिचलो चाद	नैणा री जोत	टोळी माम सू टाळवो
टोळी रो टीकायत	ढळती नथ रा मोती	परदेसियो
पीरजादो	व्हालो	फूटरियो
फूला बिचलो गुलाव	बागा मायलो चपलो	वागां रो सूवटो
बाताळु	बाया बिचलो वीजळो	भवरियं पटा रो
भाया रो लाडलो	मजलस रो माभी	मदछकियो स्याम
मनभरियो	मन रो धणी	मन रो मीत
महला मायलो दिवलो	मन रो तीमण	महला रो मान
माथै रो मोड	माल्हडो	मालको
मिजाजी	मिसरी रो डळी	मैमद मोरियो
राय	रिडमलो	रीसाळु राज
रूप रो डळी	लळवळियो सरदार	लाखीणो भरतार
लाडो	वाढालो	ससार रो सुख
सइया	सईजादो बनडो	सरद पून्यं रो चाद
सगा रो सूवटियो	सावळियो मोटियार	समदा जिस्या ग्रथाह
साना बैना रो वीर	सायधण रो चीर	सायरमल
सायर सोढो	सासू जायो	सासू रो मोबी
सिर रो सेवरो	सु दर रो सायवो	सूरज रो साखियो
सेजा रो सुख	सैणा रो सूवटो	हरियाळो बनडो
हाटा मायलो हीर	हाथा रो खतमी	हाथा रो खामची
हिवडै रो हमीर	हिवडै रो हार	हीयं री जोत
हीयै रो हीर	हथळेवे रो हाथ	हिवडै रो चीर
हेताळु हमलो	ग्रचूकरा बोलणो	कमोदणी रो चाद
गिणगोर रो ईसर	गुण सागर	धण गीसाळु
चवरी रो रूप	चूडलं रो रूप	जीव रो ग्रासरो
तुनक मिजाजी	धण रो धणी	नैणा रो वासी
नैणा रो हीर	परदेसी सूवटियो	परभात रो रूप

वागा रो छैल
मन रो राजा
रागा रो रसियो
सवाग रो चीर
सेजा रो सिणगार
सेजा रो सरूप
सेजा रो सुखवासी
काचैं किरसलियैं रो रूप
घणरूपाळु
घुडला रो असवार
थोडा वोली रो सायवो
नैंनी नणद रो वीर
वाजूडे री लूव
मोवनगारो
रेसम रो भारा
आख्या रो काजळ
माथा रो मैंमद
केतकी रा कथ
सोलह कला सुजान
माखर जिस्या भारी
बाव नोचण

वागा रो मवरो
मडियोडो मोर
रागा रो रीझाळू
सवाग रो धणी
सेजा रो सूवटियो
सोरमियो
अतर रो छकियो
घणनेहाळु
घणसंकाळु
छिरजगारो
नथडी रो मोती
फूल वनी रो सायवो
मिसरी मेवो
रसडी रो उजास
लाला बिचलो मोती
नैणा रो नीर
रगीलो वादळ
मोजारा अगसण हार
चतुर बुद्ध रा जाण
सुखकरण

मनचोर
मिणधर
सुख रो सागर
सेजा रो धणी
सेजा बिचलो स्याम
सजनी रो सूओ
अलवेलो ओठी
घण विलमाऊ
घणहसा
जगमोवणो
नखराळो
वागा मायलो केवडो
मैलां रो मेवासी
रेजो रेसम
अतर रो फूवो
नेनल रो भरतार
वाडी रा भौंरा
आख्या रा अजन
धरती सा धीमा
दुख भजक

अनुक्रमणिका

महुड़ा मे दारूडो नीपज
मद पीवे जी सासूजी रा पूत

सहेल्या ए आवो मौरियो

म्हारा सुसराजी सोनो सोळमो
म्हारा सासूजी अरथ भडार
म्हारा जेठ सा बाजूवन्द सीरखा
भाभीसा हो बाजूवन्द री लू'ब

सहेल्यां ए आवो मौरियो

म्हारा देवरजी दांती चूडलो
देराणी हो म्हारा चूडला री मजीठ
म्हारी नणदल बाई काचळी
नणदोई कसणा री लू'ब

सहेल्या ए आवो मौरियो

म्हारी धीयड हाथ रो मू'दडो
जवाई हो मू'दडा रो काच
म्हारी कवर कसू मल मौळियो
कवराणी हो मोळिया* री लीक

सहेल्या ए आवो मौरियो

अतरा जी गेणा ऊपरे
म्हारो लखपतियो ए जी सिणगार
म्हे तो वारी हो सासूजी थारी कू'ख नै
थे तो जाया जो सैंली वाल्हा पूत

सहेल्या ए आवो मौरियो

म्हें वारी हो बहुवड थारी जीभ ने
वखाण्यो हो म्हारो सौ ही परवार।

सहेल्या ए श्रावो मौरियो।

सहेलिया ! श्राम वोराया है।

राणाजी, वलिहारी जाती हू श्रापके देश पर। धन्य है वह देश जहा कोडिया के समान उज्जवल ज्वार पैदा होती है ज्या ज्यो उस ज्वार को कूटती हू त्यो त्या वह श्रौर उजला होता जाता है।

मेरी भोली ननद के वीर का हृदय भी इसी प्रकार उजला है।

सहेलिया ! श्राम वोरया है।

धन्य है राणाजी श्रापका देश। यहा गन्ने के खेत के खेन होत है। गन्ने को जितना चूमती हू, उतना ही उसमे रस श्राता जाता है।

ऐसे ही रस भरे मेरी ननद के वीर हैं।

सहेलिया ! श्राम वोराया है।

धन्य है श्रापका देश जहा वाजरी निपजनी है। कूट पीट कर "खीचडा" राधनी हू सारा परिवार श्रानन्द पूर्वक उसे जीमता है।

सहेनियो ! श्राम बोराया है।

मेवाड वासियो धन्य है श्रापका देश जहा महुए के पेड होते हैं। महुवो से मद निकलता है। मेरी सासु के पूत उसका पान करते है।

सहेलिया ! श्राम वोराया है।

मेरे श्वसुर शुद्ध स्वर्ण है, मेरी साम तो धन भडार हैं। मेरे जेठ वाजूवद है। जेठानी वाजूवद की लूब है।

देवर हस्ती दात का चूडा है, देवराणी उस चूडे का लाल रग है। ननद रेशम की कचुकी है, ननदोई कचुकी के कस की लूव है।

सहेनिया ! श्राम वोराया है।

मेरी बेटी हाथ की मूदडी है। जामाना मूदडी मे जड़ा रत्न है। मेरा बेटा कसुमल रग का पेचा है। पुत्र वधु उस पेचे का पेच है।

इन सभी आभूषणो से मुक्त पति देव मेरे सर्वश्रेष्ठ शृगार है। धन्य है सासजी आपकी कोख, जिसने निश्चय ही ऐसे लोकप्रिय पुत्र को जन्म दिया है।

सहेलियां! आम बोराया है।

बहू, आपकी जिव्हा धन्य है जिसने परिवार के सभी व्यक्तियो की सराहना की है।

सहेलियां! आम बोराया है।

* मोलिया—कु वरादे की पगडी को कहा जाता है जिसका दूसरा नाम पेचा है।

भैंरूजी

झालर रे भणके भेरू घुघरिया वजावे,
तो साझ पडे पोढण री वोरिया मठ मे धूम मचावे ।
तेलण ने कहि जो म्हारै तेल घडो भर लावे,
तो काळा गोरा जी ने कहि जो म्हारे लटी भबोलण आवै ।
कन्दोयण ने कहिजो म्हारे पेडा री छाबा लावे,
तो काळा गोरा न कहिजो म्हारे भोग लगावण आवै रे ।
कलाळण ने कहिजो म्हारे मद भर गागर लावे,
तो काळा गोराजी ने कईजो जो मद न छकियण आवै ए ।
तम्बोलण ने कहिजो जो म्हारे विड़ला री चोली लावै तो,
काला गोरा जी ने कईजो म्हारे पान चबावण आवै ।

झालर की झनकार के साथ भैरू घुघरू बजा रहा है ।
साझ होते ही पोढने के समय मठ म धूम मचाता है ।
तेलन से कहना तेल का घडा भर के ले आवे,
भैरू से कहना केशो की लट मे तेल डाल ने चले आवें ।
हलवाईन से कहना, मिठाई की टोकरी मेरे यहा लावें ।
काला गोरा भैरू से कहना, भोग लगाने को आ जायें ।
कलालिन से कहना मदिरा के गागर भर लावे,
भैरूजी से कहना, मेरे यहा मद पान करने आवें ।
तबोलिन से पान लाने को कहना
भैरूजी से कहना पान चबाने मेरे यहा आवें ।

कालाजी

जी काळा, वागां जी बागां म्हूं फिरी
जी काळा, सरवर सरवर म्हू फिरी
जी काळा, कठियन पायो फळ फूळ
जी काळा, कठियन पायो हरियो रूख
कवर काळा, कूखडली वैरण होई जी।

मुसरा के आगण ढोल न वाज्या
वाप न भेज्यो म्हारे जामणो जी काळा
सास सपूती पोतो नी झल्यो
माय न भेज्यो म्हारे पोमचो जी काळा।

भरी पूरी गोद सू चौक न वैठी
वीरो न लायो म्हारे चूदडी जी काळा
नणद सपूती सात्या नी पूर्‌या
वैण न भेजी म्हारे काचळी जी काळा।

तातो नीं जीम्यो रातो नी ओढयो
पीळो पहर सूरज नी पूज्यो जी काळा
आडो जो ले आचळ न दीनो
कदियन भीजी म्हारी काचळी जी काळा।

मेड्या पैं चढ म्हनें हेलो नी पाडियो
दौड न लाग्यो म्हारी आगळी जी काळा

रात को राख्यो वासो नी राख्या
ठणक कलेवो नी माग्यो जी काळा ।
पाड़ पाड़ोस्या का ग्रोळभा नी ग्राया
कदियन ग्रोळभा झेलिया
जो हेलो सुणजो जी सारंग खेड़ो का काळा
कूंखडली वैरण होई जी ।

काले भैरव, बाग बाग मे मैं भटक ग्राई । मुझे कही फल फूल नही मिला । सरोवर सरोवर घूम ग्राई कही मुझे हरा वृक्ष नही मिला । मेरी कोख वैरिन हो रही है ।

ससुर के ग्रागन मे ढोल नही बजा । मेरे बाप ने जामणा नही भेजा । मेरी सपूती सासु ने पोता गोद मे नही उठाया । मा ने पोमचा नही भेजा ।

भरी पूरी गोदी से मैं चौक पर न बैठी । भाई मेरे लिये चूदडी नही लाया । ननद ने स्वस्तिक चिन्ह नहीं माडा, बहिन ने मेरे लिये काचळी नहीं भेजी ।

मैंने गरम गरम खाया नही, लाल रग का ग्रोढा नही । पीळा ग्रोढ कर सूरज नही पूजा । गोदी मे पुत्र लेकर ग्राडा ग्राचल नही डाला । मेरी कचुकी दूध से नही भीगी ।

छत पर चढकर बच्चे ने मुझे पुकारा नही । भैरव, ग्रभी तक दौड कर बच्चे ने मेरी ग्रगुली नही पकडी । रात का पका हुग्रा सवेरे बासी नही खाया । बच्चे ने ठुनक कर कलेवा नही मागा ।

बच्चे की शरारत पर पडोसियो का उपालभ भी नही सुने सारग खेडी गाम के काले भैरव, मेरी प्रार्थना सुन मुझे सपूती करदे ।

सपना रो अरथ बताओ जी राज

सुणो जी भवरजी म्हा ने सपनो जो आयो जी राज
सपना रो अरथ बतावो जी राज
कहो ये गोरी थाने किण विध आयो जी राज
सपना रो अरथ बतावस्या जी राज
हस सरवर ढोला गाजत देख्या जी राज
मान सरोवर जळ भरिया जी राज
बागा मायला चपल्या फूलत देख्या जी राज
फूल बीणे दो कामण्या जी राज
पौळ्या मांयला हसती घूमत देख्या राज
हरी हरी दूव घोडा चरे जी राज
आगणिये गे चौक पूरतो सो देख्यो जी राज
ऊपर कुभ कळस धरियो जी राज
म्हेला मांयला दीवला जगता सा देख्या राज
दीवला री जोत सवाई जी राज
हस सरवर गोरी पीर थारो जी राज
मान सरोवर सासरो जी राज
बाग मायला चपल्या वीर थांरा जो राज
फूल बीणे थारी भावजा जी राज
पौळी मायला हस्ती देवर जेठ थारा जी राज
हरी हरी दूव सवासणी जी राज
आगणिया रो चौक कवर थारो जी राज

कु भ कळस थारी कुळ वहू जो राज
म्हेला मायला दीवला कथ थारा जी राज
दीवला री जोत सायवरा जी
धिन धिन सुसराजी रा वावा जो राज
सुपना रो अरथ वतायो जी राज।

भवर सुनो। मुझे एक स्वप्न आया। उस स्वप्न का अर्थ वताओ।
गौरी, वताओ, क्या स्वप्न आया। मैं उसका अर्थ वताऊगा।
हस युक्त सरोवर देखा, मान सरोवर म जल भरा हुआ देखा।
वाग मे चपा वृक्ष फूलता हुआ देखा, दो कामिनिया फूल बीन रही थी।
द्वार पर हाथी घूम रहे थे। हरी हरी दूब घोडे चर रहे थे।
आगन म चौक पूरा जा रहा था, चौक के ऊपर कु भ कलश रखा था।
महल मे दीपक जल रहा था, दीपक की ज्योति वढती जा रही थी।
पति ने अर्थ वताया। हस युक्त सरोवर तुम्हारा पीहर है।
मान सरोवर तुम्हारा ससुराल है। वाग के चपक वृक्ष तुम्हारे भाई है। फूल बीनने वाली कामिनिया तुम्हारी भावजें हैं। द्वार के हाथी तुम्हारे देवर जेठ हैं। हरी हरी दूब घर की वहन वेटियां हैं।
आगन का चौक तुम्हारा कुंवर है, कु भ कलश तुम्हारी पुन वधू है।
महल का दीपक तुम्हारा पति है, दीपक की ज्योति तुम हो।
धन्य है आप। स्वप्न का अर्थ आपने सागोपाग वताया।

दवात पूजा

सोना की दुवाता जी भवर लेखो ले रहूया
पाच बधावाजी भवर म्हारे आईया
लीना छं आचळ ओड
सोना को दुवाता जी भवर लेखो ले रहूया
बाग पुराणा जी भवर कळिया नित नूई
कळिया चूंटे सासू जी रा पूत
सोना की दुवाता भवर लेखो ले रह्‌या
कुवा पुराणा जी भवर पणघट नित नूवा
गगरो भरै बाईसा रा वीर
सोना की दुवाता जी भवर लेखो ले रह्‌या
ताल पुराणो जी भवर तैरू नित नूवा
गाबा धोवे म्हाका उमराव
सोना की दुवाता जी भवर लेखो ले रह्‌या
म्हेल पुराणा जी भवर राजा नित नवा
जाळिया झाखे खातीली नार
सोना की दुवाता जो भवर लेखा ले रह्‌या
सेज पुराणी जी भवर गोरी नित नूई
पोढे म्हारी सासू जी का पूत
सोना की दुवातां जी भवर लेखो ले रह्‌या

सोने की दवातें हैं, प्रियतम लेखा ले रहे हैं।
प्रियतम, बाग पुराने हैं, मगर कलिया नित नई खिलती हैं।
सासू के पूत कलिया तोड़ते हैं।
सोने की दवातें हैं। प्रियतम लेखा ले रहे हैं।
कुऐ पुराने हैं पर पनघट सदा नवीन है। मेरे ननद के वीर घड़ा भर रहे हैं।
सोने की दवातें हैं प्रियतम लेखा ले रहे हैं।
तालाब पुराना है पर तैरने वाले सदा नवीन है।
मेरे प्रियतम वहा वस्त्र धोते हैं।
सोने की दवातें हैं। प्रियतम लेखा ले रहे हैं।
महल पुराने हैं पर राजा सदा नवीन है। जालियो से उमग भरी नायिका झाकती रहती है।
सोने की दवातें हैं, प्रियतम लेखा ले रहे हैं।
सेज पुराना है पर प्रियतमा नित्य नवीन है। सासू के पूत सोते हैं।
सोने की दवातें हैं। प्रियतम लेखा ले रहे हैं।

व्यापारिक वर्ष दिवाली के बाद की द्वितीया से प्रारंभ हुआ करता था। नये खाते और नई बहियां इसी दिन खोली जाती। यह दिन दक्षिणी राजस्थान में 'दवात पूजा' के त्योंहार के रूप में मनाया जाता। दवातों की पूजा की जाती थी। रियासतों तथा जागीरों के प्रशासनकर्ता दिवान प्रधान अपने पूरे अमले के साथ दवात पूजा में भाग लेते थे।

भंवरजी

वातण गौरी ए खातीको वरजे छै ए पाण्यु ने मत जाव ए
वगतो सेखावत ए घुडला फेरण नीमर्यो
वगत भवरजी वेवड्ला पै वेवडलो ऊचाय ए
पग सहेल्या ए भर भर पाछी बावडी
वातण गौरी ए हाथा म्हारे ए घोडा री लगाम ए
दूजोडा हाथ मे ए भालो बीजळसार रो ।
वगत भवरजी घुडला ने वाधो नी चपला री डाळ ए
भालो जी रळकादो सरवर पाळ
वगत भवर जी भाडो तो देदेस्यू जी थानें रिपियो ए
रोक रिपियो जी थाने रिपियो रोकडो
खातण गौरी ए रिपियो तो दीजो थारे चारण भाट ने
वगतो तो सेखावत ए भाडो थारा जीव रो
खातण गौरी ए काई तो करै छै थारा देवर जेठ ए
काई तो करै छै ए परणियो थारो पातळो
वगत छैल जी रथडो घडै छै म्हारा देवर जेठ ऐ
फूलडी पाडै छै जी परणियो म्हारो पातळो
खातण गौरी ए चालै तो ले चालू थनें म्हारे देस ए
मीठा तो मतीरा ए खाटी बैरण काकडी
वगतसिंग जी चालै छै तो श्राधी पैली चाल ए
पाछै तो देसी रे सासु मण रो पीसणो

बगत छैल जी घोड़ला ने होळे होळे हाक ए
गिरद पड़े जी म्हारो चूडलो हस्ती दात को
बगत भवरजी घुडला ने धीरे धीरे हाक ए
गिरद उडे छे जी म्हारो साळु खे भरे,
बगत भवरजी घुडला ने ऊजड ऊजड हाक ए
खोजीडा रो बेटो जी खोजा खोजा चालसी
खातण गौरी ए मनडा ने धीरप राख ए
खोजीडा रो बेटो ए बगत भवर रो भायलो ।

खाती कहता है, खातिन गौरी, अभी पानी लेने मत जा । बगता सेखावत घोडा दौडाने को निकला है ।

खातिन मानी नही पानी लेने गई । खातिन कहती है, बगता भवर, मेरे घडे पर दूसरा घडा रखवादो । साथ की सहेलिया तो पानी भर भर कर वापिस लौट गई ।

खातिन गौरी, कैसे घडा उठावू । एक हाथ मे तो मेरे घोडे की लगाम है दूसरे हाथ मे बीजलसार का भाला है ।

बगता भवर, घोडे को चपे की डाल से बाध दो, बीजलसार के भाल को सरोवर की पाल पर रख दो ।

बगता भवर, तुम्ह घडा उठाने की मजदूरी दे दू गी । रोकड एक रुपया देती हू मुझे घडा उठादो ।

खातिन गौरी, रुपया तो किसी याचक को देना । बगता सेखावत तो मजदूरी म तुम्हे चाहता है ।

खातिन गौरी, तुम्हारे देवर जेठ क्या करते हैं ? तुम्हारा पति क्या करता है ?

बगता भवर, मेरे देवर जेठ तो रथ बनाते है, मेरे पातलिया पति रथ के फूलडो लगाता है ।

खातिन गौरी, चल मेरे देश चल, वहा मोठे मीठे मतीरे और खटमीठी ककडियें हैं।

बगता भवर, यदि ले चलता है तो आधी रात से पहले ले चलना। फिर तो सासु मन भर पीसने को दे देगी।

बगता भवर, घोडे को धीरे धीरे चला। मेरा हाथी दात का चूडा धूल से भर जायगा। मेरी साडी मिट्टी से भर जायगी। बगता भवर, घोडे को ऊजड रास्ते से ले चल। खोजी पावो के निसानो पर आ पहुचेंगे।

खातिन गौरी, धीरज रख, डर मत। खोजी तो मेरा मित्र है।

बड़लो

यो वड गहर घुमेर, डाळा तो पानां जोवन झुक रह्यो ।
क्या से वणावा वड री पाळ, क्या से सीचावा हरिया रूख नें
धीव गुड बधावो बड री जी पाळ, दूधा सीचावा हरिया रूख नें
मत कोई तोडो वड रा जी पान, मत कोई सतावो हरिया रूख नें
नणद वाई तोड बड रा जी पान, देवरिय छिनगारे तोडी साटकी
नणद वाई ने सासरिये खिनाय, देवर ने खिनावो राजा जी री चाकरी
नणद बाई सासरिय न जाय, देवर छिनगारो नी जावे चाकरी
नणद वाई ने मोतीडा रो हार देवरिया ने परणावो म्हारी छोटी वेनडी
खातीरा थू मोल चदण रो रूख, काठ घड लाजे रग रो ढोलियो
आगा पागा रतन जडाव, ईसा ढळवा जाभा हिंगळु
सूवा वरणी सोड भराय, गाल मसरू गादी गीदवा
ढोलणी ने चौवारे चढाय, ढोला मारूणी दानू पोढस्या
खातीरा रे असल गवार, जोडी जोरावर ढोल्यो साकडो
सूता सईया निस भर नींद, वाहर हेलो भवर कुण मारियो
ओ छै गोरी रैबारी रो पूत, करहा लदावण हेलो मारियो
रैवारी रा सोजा म्हारा वीर, रैण अधारी करहा ढाळ दे
गैली वहुवड असल गवार, करहा लद्योडा अव ना ढळै
रैवारी रा सोजा म्हारा वीर, रैण विछावा वैरी मत करे
रैवारी रा व्हैजो थारे धीव, रैण विछावा गजवी थें करया

सूती सईया निस भर नींद, जे रे जागू तो सूती अेक्ली
सूती सईया री दुपट्टो ओढ, जै रें जागू तो ओढ्य' चूंदड़ी
सूती सईया दोयकडा जोड, जै रें जागू तो सूती अेकली
नी म्हार हिवडा पें हाथ, ना रे सिराणे भवरजी री वाहडी
ना ए खूंटी भवरजी री बदूक, ना रे विलगडी भवरजी रा कापडा
घुडला सईया दीखेय न ठाण, ना रे पगाणे भवर जी री मोचडी
दासी ए थू चौवारे देख, कुण कुण लद्या कुण कुण वावड्यो
लदिया वाईजी, थारा ए स्याम, रतन रेंवारी पाछो वावड्यो
पवन थू वेंरण धीमा चाल, उडती दीसे भवर जी री फामडी
कोयल वैंरण मधरी मधरी बोल ज्यू चित्त आवे भवरजी नैं गोरडी
पान सुपारी धण रे हाथ, जोसीडा ने पूछण राजीडा धण गई
कैवोनी कैवा नी जोसी ओ पतडे री वात, कद घर आसी गौरी रो सायवो
जितरा ए गोरी वड पीपळ ए पान, अतरा दिना मे आसी सायवो ।
वाळु झाळु रें जोसी पतडे रो वेद, आक धतूरा जोसी थारो मुख भरू
पाच रिपया धण रें हाथ, बाईजी ने पूछण राजीडा री धण गई
कैंवोनी कैंवोनी ओ बाईजी सुपने री वात कद घर आसी धण रो सायवो
आसी ए भावज ढळती लग रात, सूती ने भावज आण जगासी
राधा बाईजी, थाने जिदवा रा भात, गौरी ए छुवारा थारे मुख भरा
जीमाऊ ओ वाईजी, थाने बूरा भात, थारें वीरा री पाता जीमा रिया
देस्या ओ बाईजी, थाने मोतीडा रो हार, पीळा तो पटुका री थाने काचळी
देस्या ओ बाईजी थाने दिखणी रो चीर, हर्या रेसम रो थाने घाघरो
देस्या वाईजो थारे छोटा देवर साथ भलो ए जुगत से भेजा सासरे ।

बड का पेड खूब फैला हुआ है, डालियों और पत्तियों के यौवन भार से झुका जा रहा है।

इस बड के पेड के किसकी पाल बनायें ? किस से सींचे ?

घी गुड से पाल बनाये और दूध से सींचा जाय यह हरा वृक्ष ?

कोई इसकी पत्ती मत तोडना, हरे वृक्ष को कोई न सतायें।

ननद बड की पत्तिया तोड लेती है, नटखट देवर टहनियां तोडता है।

ननद को उसकी ससुराल भेज दो और नटखट देवर को राजाजी की चाकरी पर।

ननद ससुराल नही जायगी, देवर भी चाकरी नही जायगा।

ननद को मोतियो का हार दूगी, देवर को मेरी छोटी बहन से विवाह दो।

बढई, चदन का पेड खरीद ला, उसके काठ का मेरे लिये रगदार पलग बना।

उसके पायो पर रतन जडना, बाकी स्थानो को बढिया हिंगलू से रग।

तोते के रग जैसी हरी रजाई बनाई, रेशम के तकिये और गद्दा बनाना।

पलग को ऊपर चौबारे पर चढाया, हम दोनो पति पत्नी सोये।

बढई, तू तो बिलकुल गवार निकला। जोरदार तो हमारी जोडी है, पलग सकडा बना दिया।

दोनो बडे सुख से नीद ले रहे थे, बाहर से आवाज कौन लगा रहा है प्रियतम ?

गोरी, रैंवारी आवाज लगा रहा है, ऊट लदाने के लिये बुला रहा है।

रैवारी, सोजा, मेरे भैया, अधेरी रात है। ऊटो पर लादा सामान उतार दे।

बहू, पगली हुई हो, लदा हुआ ऊटो का सामान भी कभी उतारा जाता है ?

मेरे भाई, तू सो जा, क्यों रैन विछोहा कराता है। बैरी, रैन विछोहा मत करा।

रैंवारी, तेरे बेटी जन्मे। गजबी तूने वियोग करा दिया।

जब रात्रि को सुख भर नीद ले रही थी तो प्रियतम पास था। जागी तो अपने को अकेले पाया।

सोई तब प्रियतम का दुपट्टा ओढ कर सोई थी, जगी तब अपनी चूंदडी ओढ़े थी।

सोई तब जोडी से सोई थी, जगी जब बिलकुल अकेली।

न तो हृदय पर हाथ था, और न ही सिरहाने प्रियतम की बांह थी।

खूंटी पर मेरे भवर की बंदूक भी नहीं है अलगनी पर उनके वस्त्र भी नही।

ठाण मे घोडा नही है और न पंताने उनके जूते हैं।

दासी, ऊपर चौबारे चढ कर देख, कौन कौन चले गये कौन कौन वापिस आ गये।

बाईजी तुम्हारे श्याम गये। रतन रंबारी पहुंचा कर वापिस आ गया।

पवन, धीमे धीमे चल, भवर की शाल उडती दिखाई दे जाय।

वैरिन कोयल, धीरे धीरे कूक, तेरी बोली से कदाचित भवर को अपनी प्रियतमा याद आ जाय।

पान सुपारी हाथ मे लेकर, ज्योतिषी से पूछने गोरी गई।

ज्योतिषी, पचाग देखकर कहो तो, गोरी का सायबा कब घर आयेगा ?

जितने बड पीपल के पत्ते हैं उतने दिनो मे घर लौटेगा।

आग लगाऊ तेरे पचाग और वेदो के। ज्योतिषी के मुह मे आक धतूरा दू।

पाच रुपये हाथ मे लेकर प्रियतम की प्रिया बाईजी से पूछने गई।

बाईजी, सपने की बात तो बताओ, गोरी का सायबा कब घर आयेगा।

भाभी, रात ढलते आयेगा, सोई हुई भावज को आकर जगायेगा।

बाइजी, बढिया भात बनाऊ तुम्हारा मुख मेवो से भरू।

तुम्हे शक्कर चावल खिलाऊ तुम्हारी वाणी सत्य निकली तो तुम्हे मोतियो का हार दूगी, पीले रेशम की अगिया दूगी, दखणी चीर ओढाकर हरे रेशम का घाघरा पहिना कर, बडे यत्न के साथ छोटे देवर के साथ तुम्हे ससुराल भेजूगी।

मरवण

मरवण म्हारी ये आज ढलती रात भूण चरँक्या झिलतो म्हे सुण्याजी ।

मरवण म्हारी ये दोय चळु पाणीडो म्हाने प्याव घणातो तिसाया पछी दूरको ॥१॥

सुमरा जी ना कोई म्हारँ चडस रं लाव । ना कोई कील्या म्हारँ चारिया ॥२॥

मरवण म्हारी ये लावणियारी करज्यो थे लाव धावलियारो थें तो चडसलो ॥३॥

सुमरा जी वो पोवोनी थें समद झिकोळ म्हारे नैणारो पाणी लागणो ॥४॥

मरवण म्हारी ये दीखँ थू अधक सरूप घाल नैणां मे ये झिलती नें ले चलू ॥५॥

सुमराजो वो नैणा थारँ सुरमो जी सार । नार पराई वो सागे जी ना चलँ ॥६॥

मरवण म्हारी ये दीखे थू अधक सरूप घाल गिडदँ मे झिलती नें ले चलू ॥७॥

सुमरा जी वो थें घालो तेल फुलेल नार छैला री वो सागँ जी ना चलँ ॥८॥

मरवण म्हाने य दीखँ छै धणी ये सरुप । घाल मुखडै मे गजबण ले चलू ॥९॥

सुमराजी वो मुखडै थारै चावो नागर पान नार चतुरा की वो सागै ना चलै ॥१०॥

मरवण म्हारी ये दीखै म्हानै अधक सरूप घाल मुठडी मे ये भिलती नै ले चलू ॥११॥

सुमराजी वो मुठडी थारी म्होरा पचास । नार पराई वो सागे ना चले ॥१२॥

सुमराजी जै ल्योना वाह मरोड बैठाल्यो करहे पर भिलती ने ले चलो ॥१३॥

सुमराजी थारा करहला हलवा हाक चुडलो तो मुळै छै वो हस्ती दात रो ॥१४॥

मरवण म्हारी ये मुळैछै तो मुळवाजी देय और चीतराद्य म्होर पचासारो ॥१५॥

सुमराजी वो थारै करहळा नें धीरै धीरै हाक गरद भरै छै वो लाखी लोवडी ॥१६॥

मरवण म्हारी भरै छै तो भरवाजी देय और रगादू म्होर पचास की ॥१७॥

सुमराजी वो ये कुण्या जी रा काकड खेत कुण्या रा कुरहला रळमिळ चर रया ॥१८॥

मरवण भारा सुसरैजी रा काकड खेत वावैजीरा करहा रळमिळ चर रया ॥१९॥

मायड म्हारी ये ढकिया तो फळसा तू खोल पग तो पडैछै पू गल पदमणी ॥२०॥

सुमरा जी थे पाछा फिर देख दळ बादल उलट्या छै जगपत जेठ का ॥२१॥

सुमरा रे तो कोई दौडी धाड कोई तो मुकलावो गजबी मारियो ॥२२॥

मायड म्हारी ना मे दौडी छै धाड सिर रे तो साटै ल्यायो पदमणी ॥२३॥

जेठजी म्हारा काटी धर कर तौल । राई तो घटै ना जेठजी तिल वधै ॥२४॥

मरवण कुऐ पर खडी है सुमरा वहां जा निकलता है । मरवण को देखते ही वह मुग्ध हो जाता है । कहने लगा

मरवण ! मै बहुत प्यासा हू, दो चुल्लु पानी पिलादे ।

सुमराजी, यहा न तो लाव है और न चडस है । बारिया और कोलिया (चडस को झेलने वाले पानी निकालने वाले) भी कोई नही है । पानी कैसे पिलावु ।

सुमरा सहास्य कहता है मरवण ! घाघरे की लावणियो की तो लाव बनालो, धावले का चडस बनालो ।

सुमराजी ! तालाब से पानी लेकर पीलो । मेरे नयनों का पानी तो रायने वाला है ।

मरवण । तू अत्यधिक सुन्दर है, तुझे नयनो म डाल ले चलूगा ।

सुमरा ! अपने नयनो म तो सुरमा आजो ! पराई स्त्री साथ नही चलती है ।

मरवण ! तुझे गिडदो मे (वालो म) छिपा कर ले चलूगा ।

गिडदों मे तेल फुलेल डालो। रसिक की पत्नी तुम्हारे साथ नहीं जायेगी।

मरवण तू इतनी सुन्दर है, तुझे, मुट्ठी मे बन्द कर ले जाऊगा, तुझे मुख मे डाल ले चलूगा।

सुमरा ! मुट्ठी म मोहरें रखो, मुख मे पान रखना, चतुर पुरुष की नारी तेरे साथ जाने वाली नही।

सुमरा के साथियो को क्रोध आया। सुमरा ! देख क्या रहे हो बाह पकड इसे ऊट पर चढा दो। इसे ले चलें।

सुमरा मरवण की बाह पकड ऊट पर बैठा चलता हुआ।

मरवण ने सोचा अब चतुराई से काम लेना चाहिये। इसे बातो मे लगा दू तब तक यह समाचार सुन घर से लोग दौड आयेंगे।

सुमराजी ! ऊट धीरे धीरे हाको ! मेरी हाथी दात की चूडियें टेढी हो जायेगी।

कोई बात नही मैं तुम्हे पचास मोहर का नया चूडा चीरा दूगा।

सुमराजी अपने ऊट को धीरे तो चलावो, मेरी कीमती, ओढणी धूल से भर रही है।

मरवण ! धूल से भरती है तो भरने दो। तुझे बढिया दूसरी लोवडी रगा दुगा।

मरवण ने सुमरा को बातो मे लगाना चाहा।

सुमराजी ! यह किसके खेत हैं ? ये हिलमिल कर किसके ऊट चर रहे हैं।

मरवण ! यह तुम्हारे ससुरजी के खेत हैं। मेरे पिता के ऊट चर रहे हैं।

सुमरा ने घर पहुच कर दरवाजा खटखटाया मा मा बन्द दरवाजा तो खोल। यह देख पूगल की पदमनी तेरे पाव लगती है।

मरवण ने मुड कर देखा, पीछे गिद उड रही है। उसने प्रसन्न होकर सुमरा से कहा, सुमरा, पीछे देख गिर्द के बादल उड रहे हैं मेरा जेठ लेने आ गया है मुझे।

सुमरा की मा ने पूछा सुमरा ! बात क्या है, कही डाका डाला है तू ने या कही किसी को मार कर आया है ।

सुमरा बोला, मा न तो कही डाका ही डाला कर आया हू और न किसी को मारा ही है । मैं तो मस्तक के मोल पर पद्ममनी को लाया हू ।

इतने मे जेठ आ पहुचा । मरवण दौडकर उसके पावो मे पडी । जेठजी ! मैं पवित्र हू । मुझे किसी ने छुआ भी नही ।

---

* सूमरा के कई गीत और गाथाये प्रचलित है । राजपूतों की एक खोप का नाम सूमरा है । धर्म परिवर्तित मुसलमान सूमरा भी है । राजपूत और मुसलमान सूमरा राजस्थान के उस भू भाग में हुए है जो अब सिंध (पाकिस्तान) मे है । ऊमरा और सूमरा के गीत अब भी गाये जाते हैं ।

चित्तौड़ा

ग्रायो छँ चित्तौडा रो साथ, हा ग्रो चित्तौडा जी ग्राज बसो नीं प्यारी जी रा देश मे ।

बसियो घरण ग्रो वसियो नी जाय, हा ग्रो मिरगा नैणी थारा नै सरीखी जोवे वाटडी ।

मरू के जीवू म्हारी माय हा ग्रो ग्रालीजा रूप वखाणियो लोडी सौक रो ।

नोज मरे ग्रो म्हारी धीय, हा ग्रो म्हारी धीय मरजो चित्तौडा री लौडी सौक जी ।

घोडला नै जी ठाण बधावु, हा ग्रो चित्तौडा जी हस्ती झुकाऊ माणक चौक मे ।

वैलिया नै जो दाणो दिरावु, हा ग्रो पावणा जी कुरिया झुकाऊ वाळु रेत मे ।

साथीडा नै ग्रो जी दुवारो पिलाऊ, हा हो चित्तौडा जी ग्राप रै जीमण नै मूळा मद सोयता जी ।

साथीडा नै ग्रो जी दासी परणावु, हा ग्रो चित्तौडा ग्राप रै मेला सुन्दर गोरडी जी ।

श्रपने साथ के दल के साथ चित्तौडा श्राये हैं।

पत्नि कहती है, श्राज तो श्राप यहा मेरे पास ही ठहरो।

मृगनयनी, ठहर नहीं सकता। तेरे जैसी ही सुन्दरी मेरी प्रतिक्षा कर रही है।

मेरी मा, मैं मरू या जीऊ ? पति ने मेरी सौत का रूप बखाना है।

मेरी बेटी, तू क्यो मरे। मरे तेरी सौत।

सास श्राकर कहती है चित्तौडा श्राप यही ठहरो। श्रापके घोडो को श्रस्तबल मे बधा देती हूँ। हाथियो को माएाक चौक मे झुका दो। ऊटो को बालु रेत म वैठा देती हूँ। बैला को दाना दिला देती हूँ।

श्रापके साथ वालो के लिये दुबारा भेग देती हूँ। श्रापके लिये उत्तम मदिरा, सूळा, पुलाब प्रस्तुत है।

श्रापके साथियो का विवाह यहा दासियो के साथ करा दूगी। श्रापके महलो मे मेरी सुन्दर वेटी शोभा देगी।

पैले ओ सावण भेला रैवस्यां

काळी काळी काजळिया री रेख
काळी ने काठळ मे चमके बीजळी
बरसो बरसो मेहा जोधांणे रे देस
जठै जामण जाया री चाकरी

ऊभा ऊभा हो राणी छानलिया री छोह
ऊभोड़ा कागद मोकळे
आजो आजो राजानामी सावणिया री तीज
पैले ओ सावण भेळे रैवस्या

आडा आडा हो राणी समंद तळाव
आडी नदिया हो नीर घणों
आडी ने बाईसा रो सासरो

लाजो लाजो राजानामी बाई सारे बोरंग चूंदड़ी
म्हारे ओ सोळे सिणगार

समंदा समदा राजानामी जहाज तिराय
नदिया ओ तेरु रा बेटा नै मेल जो
लाया लाया रा राणी सोळे सिणगार
बाई सा रे बोरग चूंदडी

काले काले कज्जलवर्ण बादलो मे बिजली चमक रही है।

मेह, बरस बरस जोधाणा के देश मे वरस। वहा मेरा सहोदर चाकरी मे गया हुआ है।

छज्जे की छाह मे खडी पत्नी पत्र भेज रही है, मेरे राजा सावन की तीज पर यहा आ जाना। सावन का महिना हम साथ रहेंगे। ननद के लिये बहुरग चूदडी लेते आना। मेरे लिये सोलह शृगार लाना।

रानी कैसे आऊ? मार्ग मे बहुत से तालाब है, मार्ग रोके नदिया बह रही हैं। मार्ग मे बहिन का ससुराल है।

मेरे राजा, तालाबो मे जहाज डाल देना, नदियो को तैराको की सहायता से तैर कर पार हो जाना।

रानी, ले आया हू तुम्हारे लिये सोलह शृगार और बहिन के लिये बहुरगी चूदडी।

जवांई

सारस बोली ढळती माझल रात
एक सनेसो रा म्हारी कुरजा राणी लै उडो
कीजो म्हारो चतर जवाईसा ने जाय
ऊनाळे मत आजो जी परदेसो प्यारा पावणा जी
दाझेला घोडला रा पाँव
दाझेला करहलिया रा पाव
गरमी घणी छै जी म्हारा राजकवर रा म्हेल मे

सारस बोली ढळती माझल रात
एक सनेसो रा म्हारी कुरजा राणी ले उडो
कीजो म्हारा चतर जवाइजी ने जाय
चौमासे मत आजो जी जग व्हाला प्यारा पावणा जी
रपटेला घोडला रा पाव
रपटेला करहलिया रा पाव
माछर घणा छै म्हारो घण परवारी रा म्हेल मे

सारस बोली ढळती माझल रात
एक सनेसो रा म्हारी कुरजा राणी ले उडो
कीजो म्हारा परदेसयडा ने जाय
सीयाळे मत आजो जी जुग व्हाला प्यारा पावणा जी
ठढा छै घुडलारा पाव
सरद घणी छै जी म्हारा राज कवर रा म्हेल मे

ढलती रात को सारस पक्षी बोला।

कुरज रानी, हमारा एक सन्देश लेकर तुम उड जाग्रो।

चतुर जवाइजी को जाकर कहना, बाई को लेने ग्रभी तुम गर्मी मे मत ग्राना। गर्मी मे मत ग्रा ना।

प्यारे पाहुने, गर्मी मे तुम्हारे घोडो के पाव जलेंगे। ऊटो के पाव जलेंगे।

तुम्हे भी कष्ट होगा। मेरी राज कवरी के महलो मे गर्मी ज्यादा रहती है।

ढलती रात को सारस पक्षी बोला।

कुरजा रानी, मेरा एक सन्देशा लेकर तुम उड जाग्रो।

चतुर जवाई जी से जाकर कह देना ग्रभी बरसात की मौसम मे बाई को लेने न ग्रायें।

प्यारे पाहुने के घोडो के पाव फिसल जायेगे। ऊटो के पाव फिसल जायेगे।

राजकुवरी के महल मे मच्छर भी बहुत है।

ढलती रात को सारस पक्षी बोला

कुरजा रानी, एक सन्देश लेकर उड जाग्रो।

परदेशी जवाई को जाकर कह दो ग्रभी सर्दियो मे बाई को लेने नही ग्रायें।

लोक प्रिय, प्यारे पाहुनो के घोडो को सर्दी म कष्ट होगा।

राज कवरी के महल ठढे भी बहुत है।

थांरो वीरो

कद घर श्रासो श्रो बाइजी थारो वीरो
चालो श्रो वाईजी श्रापा दोनू सरवर चाला
पाणीडो भरण श्रावे थारो वीरो

कद घर श्रासी श्रो बाइजी थारो वीरो
चालो श्रो बाइजी श्रापा दोनू बागा चाला
सैल करण श्रावे थारो वीरो

कद घर श्रासी श्रो बाइजी थारो वीरो
चालो श्रो बाइजी श्रापा दोनू डैहरा चाला
घुडलो चरावण श्रावे थारो वीरो

कद घर श्रासी श्रो बाइजी थारो वीरो
चालो श्रो बाइजी श्रापा दोनू ताला चाला
घुडलो दोडावण श्रावे थारो वीरो
कद घर श्रासी श्रो बाइजी थारो वीरो

ननद बाई तुम्हारा वीरा कब घर श्रायेगा ?

बाईजी, चलो, हम दोनो तालाव पर चलें। कदाचित तुम्हारा भाई भी उधर पानी के लिये श्राये।

ननद, तुम्हारा भाई कब घर आयेगा ।

बाईजी, चलो, हम तुम दोनो बाग की ओर चलें । कदाचित तुम्हारा भाई घूमने के लिये उधर चला आये ।

बाईजी, हम दोनो "डेहरा" की ओर चलें कदाचित तुम्हारा भाई उधर घोड़े चराने आ जाय ।

बाईजी, चलो, हम तुम "ताल" की ओर चलें । कदाचित तुम्हारा भाई उधर घोड़े दौड़ाने आ जाये ।

तुम्हारा बीरा कब घर आयेगा ननद बाई ?

गणगोरयां आजो पांवणा

जी सायबा जावा छा म्हें दादाजी के देस
जी सायबा जावां छां म्हे वीराजी रे देस
पण पाछे आप आजो जी म्हा का राज
जो सायबा होळी करी छी परदेस
गणगोरया आजो पावणा जी म्हा का राज

जी सायबा सासू सपूती का पूत
जो सायबा दमडी का तंदू मगावो
लाडू कर मानस्या जी म्हां का राज
जी सायबा लाजो चणा की जी दाळ
चारोळी कर मानस्या जी म्हाका राज

जी सायबा लाजो सरसू को जी तेल
अन्तर कर मानस्या जी म्हा का राज
जी सायबा लाजो डूमला को टूक
खोपरो कर मानस्या जी म्हा का राज

जी सायबा लाजो जी कामळ को टूक
साळू कर मानस्या जी म्हा का राज
जी सायबा लाजो जी चादी को तार
गेणो कर मानस्या जी म्हा का राज

जी सायबा रात्यूं हो वाळियो जी तेल
पईसो म्हारे यूं ही गयो जी राज
जी सायबा रात्यूं जी चावियो पान
अधेलो म्हारो यूं ही गयो जी राज

जी सायबा रात्यूं जो नाळी वाट
नीदड म्हारी यूं ही गई जी रात
जी सायबा आगणिया पग देता
आया कर मानती जी म्हा का राज

जी सायबा बाळक सूं वतळाता
बोल्या कर मानती जी म्हा का राज
जी सायबा सेजा मे पग देता
पोढ्या कर मानती जी म्हा का राज

जी सायबा रही जो फूला छाई सेज
सिराणं डोडा लायची जो म्हा का राज
जी सायबा अबोलो देवर जेठ
अबोलो गोरी सूं नो निभेजो म्हा का राज

जी सायबा अबोलो जी पाड पडोस
अबोलो गोरी सूं नी निभेजी म्हा का राज
जी सायबा अबोलो दिन दो चार
सदा ही अबोलो नी निभेजो म्हा का राज

प्राण, मैं बाबुल के देश जा रही हू ! वीरा के देश जा रही हू । पर देखो *तुम भो वहा आ जाना । होली तुमने परदेश मे मनाई थी,* गणगौर पर मेरे पीहर पाहुने बनकर आना ।

सपूती सासु के पुत्र, तुम आना अवश्य । प्रेम से तुम चाहे जो छोटी से छोटी वस्तु ले आना वही मेरे लिये महान हो जायेगी । एक दमडी के

तेंतुल ही ले आना । मुझे तो वो मोदक से भी मीठे लगेंगे । चने की दाल ही ले आना । मैं तो उसे चिरौंजी से बढकर समझूंगी ।

प्रियतम, सरसो का तेल ही ले आना । इत्र फुलेल से अधिक सौरभ मय होगा वह मेरे लिए । कागज बने झुमले का टूटा हुआ टुकडा भी तुम ले आओगे तो नारियल हो जायेगा मेरे लिये ।

प्रियतम, फटे हुए कबल का टुकडा ही लेकर तुम चले आओगे तो उस टुकडे को ही बेशकीमती साडी समझूगी, खोटी चांदी का तार ही ले आये तो मेरे लिए वह आभूषण बन जायेगा ।

प्रियतम, रात भर दीपक जलाकर तुम्हारी प्रतीक्षा करती रही । तुम न आये । मेरा तो तेल ही व्यर्थ जला । तुम्हारे आगमन की आशा मे एक अधेला मे पान खरीद कर खाया था, मेरा तो वह अधेला फिजूल ही गया, तुम नही आये ।

रात भर मैंने तुम्हारी प्रतीक्षा की । मेरे नयनो की नीद व्यर्थ ही खराब हुई । तुम आगन मे पाव ही धर देते तो तुम्हे आया हुआ ही समझ लेती ।

तुम यहा आकर किसी बच्चे से ही बोल ही गये होते तो मैं मान लेती मुझ से प्रेमालाप कर लिया । सेज का स्पर्श ही कर जाते तो सोया हुआ मान लेती ।

फूलो से छाई सेज सूनी रह गई, सिरहाने इलायची पडी ही रह गई, मेरे राजा ।

प्रियतम, देवर जेठो से अनबोलना निभ सकता है, अपनी पत्नी से अनबोलना कभी निभ सकता है ?

आस पडौस वालो से अनबोलना चल सकता है, घर की स्त्री से अन बोले कैसे काम चलेगा ?

दो चार दिन तो बोले पत्नी से निभ जाता है पर सदा अन बोलना कैसे निभेगा, मेरे राजा ।

मारूजी

दिल्लो सहर म्हारो बाप बसे छै
बागा मे गुलक्यारी जी
फूलडा जी फूलडा सेज बिछाई
पोढण की चतराई जो
पेलो जो पाव पलग पर दीनो
तमाखू गरणाई जो

—चल्या जाओ पिया परदेस
तमाखू म्हाने नी रे सु वावे जी
आधडली रात पेहर को छो तडको
मारूजी ने घुडलो सवार्यो जी
आघडली रात पेहर रो छो तडको
लखपनिया ने घुडलो सवार्यो जी
सास नणद सब सोय रही
म्हाका मारूजी ने कोण मनावे जी
दोराण्या जिठ्याण्या सब सोय रही
पन्ना मारूजी ने कु ण समझावे जी

भीणो सो काढ्यो घू घटो, घुडला की पकडी लगाम जी
मत जावो पीया परदेस-तमाखू म्हाने बोत सुवावे जी
दिल्ली सेहेर म्हारो बाप वसै छै
वागा मे गुलक्यारी जो

गणगोरयां रा गीत

आटकपुर री ई डोणी म्हारो नौ घाघर रो माटो बेटा रायारा
गौरल पाण्यु साचरी पण हाजी सात सहेल्या रे साथ बेटा रायारा
सगळी भर भर नीसरी पण हाजी म्हारी गौरल रही हो तळाव बेटा राया रा
पाळ चढता राजवो पण हाजो म्हारो भरियो माट उठावो बेटा राया रा
जो मैं माट ऊचावस्या पण हाजी म्हाने नजर मेळावो देयो बेटा रायाँ रा
फट लोभी फट पापीडा पण हा जी म्हारे वोल बणास्यो काई ओ बेटा राया रा
सुसराजी गाम गरास्या पण हा जी म्हारा बाप दल्ली रा राव जी बेटा राया रा
सासुजी सौळा नरमळा पण हा जी म्हारी माय गगा रो नीर ओ बेटा रायां रा
देवर देवा आगळा पण हा जी म्हारो वीर गोकळ रो कान्ह ओ बेटा राया रा
नणदल आमा वीजली पण हा जी म्हारी बैंन मावण री तीज ओ बेटा राया रा
सायब सिर रो सैंवरो पण हा जी म्हारो पूत मदर रो दीवलो ओ बेटा राया रा
आपज देवळ पूतळी पण हा जी म्हारी सोक गोबर री हेल ओ बेटा राया रा

हेल दचोको चौवटे पण हांजी कोगत आया लोग हो वेटा राया रा
मलिया वामण वाणया पण हाजी मलिया चारण भाट ओ
वेटा राया रा
आधा नै देवो गुळ गूगरी पण हाजी आधा नैं दोवड गोठ ओ
वेटा राया रा

आटक्पुर की ईंडोणी और नो माटो की घाघर ले गौरी सात सहेलियो के साथ पानी भरने चली और तो सारी सहेलिया पानी भर के चली गई। गौरी पीछे रह गई।

"पाल पर जाने वाले पथिक घाघर तो उठवा दो।"

"घाघर तो उठादू पर मुझे जरा तुझे देखने दे।"

गोरी ने धिक्कारा लोभी, पापी इन शब्दो को वापिस ले ले।

जानता है तू किससे बात कर रहा है ? मेरे श्वसुर गाव के स्वामी है, मेरे पिता दिल्ली के राव हैं। मेरी सास पवित्र, निर्मल है और मेरी माता तो मानो गगा का नीर है।

मेरा देवर देवो सा सुन्दर है, मेरा भाई तो गोकुल का कान्हा ही है।

ननद आभा की बीजली के समान चचल है, मेरी बहिन सावन की तीज सी है।

मेरा पति सिर का सेहरा है और मेरा वेटा तो मदिर के दीपक सरीखा है।

मैं स्वय देवालय की प्रतिमा हू।

पर मेरी सौत तो ऐसी है जैसी गोबर से भरा टोकरा।

वह चलते चलते चौहट्टे मे फिसल पडी तो लोगों की बडी हसी उडाई।

ब्राह्मण, बनियो ने चारण भाटो ने उसे गिरते देखा और हसे उन्हे, गुड, गूगरी बाटूगी और गोठ दिलाऊगी।

म्हैंदी

ऊचलिये मंगरिये री म्हैदी
जैसाणै री ढेल म्हारी
म्हैदी रग राचणी
म्हैदडी रो रग रातो
हालो ए सहेलिया रमण चाला
चादण री धत्त रात
म्हैंदी रो रग राचणो
रमण जोगो चौवटो
म्हारी खेलण जोगी रात,
म्हैदी रो रग राचणो
जाय म्हारे ढोले जी ने यू कह्या
मेहूडा वूठा घर श्राय
म्हैंदी रो रग राचणो
मेहूडा वूठा तो भली हुई
बायजो कवडाळी जुवार
म्हैंदी रो रग राचणो
जाय म्हारे ढोला जी ने यू कह्या
थारे पूत जलम्यो घर श्राय,
म्हैंदी रो रग राचणो
पूत जलम्यो तो भली हुई

नव मण सकर वाट
म्हैंदी रो रग राचणो
जाय म्हारे ढोले ने यूं कहया
थारी गोरादे ने झूम्यो काळो साप
म्हैंदी रो रग राचणो
चढो चढावो वेलियां
जीमस्यूं चूडलाळी रे हाथ
म्हैंदो रो रग राचणो
छाणा चुगती डोकरी
पूछो रे घराळा समाचार
म्हैंदी रो रग राचणो
पालणिये मे हीडै गीगो लाड को
आगणिये मे ऊभा थारी नार
म्हैंदी रो रग राचणो

पहाडी प्रदश की मेहदी है। लगान वाली जैसलमर की वाला है।

मेहदी खूब रचन वाली है। खूब लाल रग है।

आग्रो, सहेलिया, खेलने चलें। सफेद चादनी रात खिली हुई है। घूमने लायक स्थान है और खेलने लायक रात है।

मेहदी खूब रचने वाली है।

जाकर मेरे पति से कहना, मेह बरस गया है। घर आग्रो। महदी खूब रचने वाली है।

मेह वरस गया तो अच्छा हुआ। बडे दानो वाली ज्वार बो डालो।

जाकर मेरे पति से कहो, तुम्हारे बेटा हुआ है घर आग्रो।

मेहदी खूब रचने वाली है।

बेटा हुआ तो अच्छा हुआ। नौ मन शक्कर बांट दो।

जाकर ढोला से कहो, तुम्हारी पत्नी को काले सांप ने डस लिया।

मेहदी खूब रचने वाली है।

साथियो, जल्दी करो, जल्दी से जीन कसो। मैं तो जाकर पत्नी के हाथ से जीमूंगा।

मार्ग में मेथड़ी चुनती हुई बुढ़िया से घर के समाचार पूछे।

पालने में तुम्हारे पूत खेल रहा है। आंगन में तुम्हारी पत्नी खड़ी है।

मेहदी खूब रचने वाली है।

बड़ भागण गौरी मांन करे

जळ केरी माछळी, अम्बर केरा तारा
इण सरवर में तो हास पियारा, हाँ
माण करे मोटे घर जाई हां
माण करें मोटे घर आई हा।
वड भागण गौरी मान करें।

कोरी कोरी कुलडी मे दही जमायो हा
दिन रो तो रूठो रसियो राति मनायो हा
वड भागण गौरी मान करें।

महला तो जाय वाई म्हारी रूसणो न कीजे हा
जो रूसे तो मनाय रस लीजै हा
जो मागे सो ही हस हस दीजै हा
वड भागण गौरी मान करें।

लू गा रो चटियो गौरी गाठ गंठीलो हा
सासु रो जायो रसियो घणो हठीलो हां
वड भागण गौरी मांन करें।

अतलस की अगिया वाई फाटण न दीजै हा
जे फाटे तो सीवाय रस लीजै हा
वड भागण गौरी मांन करें।

बेटा हुआ तो अच्छा हुआ। नौ मन शक्कर बांट दो।

जाकर ढोला से कहो, तुम्हारी पत्नी को काले सांप ने डस लिया।

मेहदी खूब रचने वाली है।

साथियो, जल्दी करो, जल्दी से जीन कसो। मैं तो जाकर पत्नी के हाथ से जीमूंगा।

मार्ग में थेपडी चुनती हुई बुढिया से घर के समाचार पूछे।

पालने मे तुम्हारे पूत खेल रहा है। आंगन मे तुम्हारी पत्नी खडी है।

मेहदी खूब रचने वाली है।

बड़ भागण गौरी मांन करे

जळ केरी माछळी, अम्बर केरा तारा
इण सरवर मे तो हास पियारा, हाँ
माण करै मोटे घर जाई हा
माण करै मोटे घर आई हा ।
वड भागण गौरी मान करै ।

कोरी कोरी कुलडी मे दही जमायो हा
दिन रो तो रूठो रसियो राते मनायो हा
बड भागण गौरी मान करै ।

महला तो जाय बाई म्हारी रूसणो न कीजै हा
जो रूसे तो मनाय रस लीजै हा
जो मागे सो ही हस हस दीजै हा
बड भागण गौरी मान करै ।

लू गा रो चटियो गौरी गाठ गठीलो हा
सासु रो जायो रसियो घणो हठीलो हा
वड भागण गौरी मान करै ।

अतलस की अगिया बाई फाटण न दीजै हा
जे फाटै तो सीवाय रस लीजै हा
वड भागण गौरी मान करै ।

मोतीड़ा रो हार बाई टूटण न दीजै हां,
जै रै टूटे तो पोवाय रस लीजै हां।

वड़ भागण गौरी मान करै।

जल मे मछली, नभ मे तारे और सरोवर मे हस प्यारे लगते हैं।

बडे घर मे उत्पन्न और बड़े घर मे व्याहिता, मान करने लग जाती है।

वड भागिनी स्त्रिया मानिनो हो जाती है।

कोरे कुल्हड मे जैसे दही जमा दिया जाता है उसी भाति दिन के रूठे पति को रात मे मना लेना चाहिये।

बेटी, शयन कक्ष मे जा रूठना नहीं चाहिये। यदि वह रूठा भी हो तो मना लेना चाहिए जो वह मागे हँस हस कर दे देना। लोग की लकडी का चटिया, गाठ गठीला होने पर भी अच्छा होता है। उसी प्रकार सासुका बेटा भी बडा हठीला, रसिक है।

अतलस (बढिया वस्त्र) की कचुकी को फटने नही देनी चाहिये, सावधानी से रखनी चाहिये। यदि फट ही जाय तो भी दुरुस्त कर उसका आनन्द ले लेना चाहिये। बढ भागिनी मान करने लगती है। बेटी। मोतियो के हार को सम्भाल कर रखना चाहिये, कही टूट न जाय। यदि टूट ही जाय तो फिर से पोवाय उसका रस लेना ही चाहिये। इसी भाति पति रूठ जाय तो मना लेना चाहिये।

ओलुं

छाजा री गैरी गैरो छाया लसकरिया
मायड बेटी दोनू बैठता
करता मनडा री बात लसकरिया
ओळुडी तो आवे म्हारा माय री
ओळुडी तो आवे म्हारा बाप री

ओळु थारी परी ए निवारो पियर पूरी है
बाप रा भोळा सुसरो जो भागसी
ससुरा जी बाईसा रा बाप लसकरिया
वहुवड कंय बतळावसी
थोडा एक घुडला ढाबो लसकरिया
मिलती चालू म्हारी माय सू

म्हारा तो घुडला तिसाया पियर पूरी ए
म्हे ही तो जास्या म्हारा देसने
म्हारे पिछोकडे बावडी लसकरिया
मैं ही सीचा था हो पाव जो

म्हारा तो घुडला भूखाळु पियर पूरी ए
म्हा ही तो जास्या म्हारा देस ने
म्हारे पिछोकडे हरी दूबसा
म्हे ही वाढा था हो नीरजो

म्हारा साथीडा भूखाळा पियर पूरी ए
म्हे तो जास्या सा म्हारा देस मे
साथीडा ने भात पसावा लसकरिया
आप रा डेरा रग रा महल मे

मेरे लश्करिया मुझे अपनी मा की याद आती है।

हम दोनो मा बेटी छज्जे की गहरी गहरी छाह म वैठती थी। मन की बातें करती थी।

मुझे मेरी मा की याद आ रही है। मेरे बाप की याद आ रही है।

पीहर के चाहने वाली, पीहर की याद भुला दो। बाप के स्थान पर ससुरजी को समझलो।

लश्करिया, ससुरजी तो ननद बाई के पिता है। मुझे ता वह बहू कह कर ही बुलायेंगे। अपना घोडा रोको। मैं मा से मिलती जाऊगी।

मेरे घोडे प्यासे हैं। मैं तो सीधा अपने देश को जाऊगा।

लश्करिया, मेरे घर के पीछे ही बावडी है, मैं पानी सीच दूगी तुम घोडे को पिला देना।

मेरे घोडे भूखे है। मैं तो सीधा अपने देश जाऊगा।

मेरे पिछवाडे हरी दूव है, मैं काटूगी तुम घोडो को खिलाना।

मेरे साथी भूखे है। मैं तो सीधा अपने देश जाऊगा।

लश्करिया, तुम्हारे साथिया के लिये भात बनाती हू तुम्हे रग महल मे ठहराऊगी।

जवाई

म्हारे य कुण सावण भादवो
म्हारे ये कुण सावणिया री लू व
ग्रो जुग व्हाला थारी ग्रोळु ग्रावे

म्हारे जवाइसा सावण भादवो
म्हारे कवर बाई सावणिया री लू व
ग्रो परदेसी थारी ग्रोळु ग्रावे

म्हारे ये कुण तिमण्यो तेवटयो
म्हारे ये कुण हिवडा रो हार
ग्रो परदेसी थारी ग्रोळु ग्रावे

म्हारे जवाइसा तिमण्यो तेवटियो ग्रो
म्हारे कवर वाई तिमण्या री चीडा ग्रो
ग्रो जुग व्हाला थारी ग्रोळु ग्रावे

म्हारे ये कुण कसूमल काचळी
म्हारे ये कुण कसणा री लू व
ग्रो जुग व्हाला थारी ग्रोळु ग्रावे

म्हारे जवाईसा कसूमल काचळी
म्हारे कवर वाई कसणा री लू व
ग्रो जुग व्हाला थारी ग्रोळु ग्रावे

म्हारे ये कुण हाथ रो मूदडो
म्हारे ये कुण हाथा री मेदी
ग्रो परदेसी थारी ग्रोळु ग्रावे

म्हारे जवाइसा हाथ रो मूदडो
म्हारे कवर वाई हाथा री मेदी
ग्रो परदेसी थारी ग्रोळु ग्रावे

कौन सावन भादो है ? कौन सावन के मेह की झडी है ?
जगप्रिय जामाता की बडी याद ग्राती है।

मेरे जामाता सावन भादो के समान है बाईजी सावन की झडी है परदेसी तुम्हारी बडी याद ग्रा रही है।

कौन गले का तिमण्या है ? कौन हृदय का हार है ? परदेसी जामाता की बडी याद ग्राती है।

जामाता गले का तिमण्या है बाईजी तिमण्या मे पिरोई हुई चीड है। जग प्रिय जामाता की याद ग्रा रही है।

कुसुमल रग की कचुकी कौन है ? कौन है उस कचुकी के बाधने की डोरी की लूब ?

मेरे जामाता कसुमल रग की कचुकी है बाईजी कचुकी के कसो की लूब है। जगप्रिय जामाता की याद ग्रा रही है।

हाथ की मुद्रिका कौन है ? कौन है हाथ मे रची मेहदी ?
जामाता हाथ की मुद्रिका है बाईजी हाथ मे रची हुई महदी है।
परदेशी जामाता की बडी याद ग्राती है।

करहला धीमा चालो राज
मारवण बैठी महल मे रे कुरजा पसारी पाख
ढोला तणा ए ओळभा मारवण लिखिया डावी पाख
ढोला जी बैठा महल मे ए कुरजा पसारी पाख
मारवण तणा ए ओळभा काई वाचिया डावी पाख

करहला धीमा चालो राज
बाडो भरियो करहला रे जिण माय आछो सोय
सौवा तो मायला दस भला रे दस मायला एक
करहला थू म्हारा बाप रो रे साभळ म्हारी बात
मत जा ढोला जी रे सासरे नीरु नागर बेल

करहला धीमा चालो राज
करहलो कैवे सुण सुन्दरी ए साभळ म्हारी बात
जास्या ढोला जी रे सासरे चरस्या नागर बेल
ढोला जी कवे सुण करहला रे साभळ म्हारी बात
साझ पड दिन आथमे रे म्हारी मरवण मेळो नी आज

करहला धीमा चालो राज
करहलो कै वे सुणो ढोला जी साभळ म्हारी बात
काढो जी डावा पग रो ताकळो थारी मरवण मेळू आज
ढोला जी करहलो ढावियो रे झेंक्यो रेळुडा रे माय
काढ्यो डावा पग रो ताकळो काई पूगो छिन रे माय
करहला धीमा चालो राज

पथिक मेरी एक बात सुन। मारवण के उपालभ तुम ढोला को जाकर कह देना।

कहना तुम्हारी मारवण पका हुआ बेर है रस चखने को आ।

माग पर जाते ऊट सवार मेरी बात सुनता जा। ढोला को मारवण की ओर से उपालभ देना।

कहना, मारवरा आम की भांति पक गई है, रस पीने घर जा। मारवरा मस्त हथिनी हो रही है। आंकुश ले घर पहुच। तेरी मारवरा घोडा है, चाबुक ले घर पहुच।

क्रौंच पक्षी कुरजा, तू मेरी धर्म वहिन है, मेरी बात सुन। ढोला को उपालभ लिखना चाहती हू, बता कौन से पख पर लिखू।

कुरजा (क्रौंच पक्षी) बोली, मेरी बायें पख पर उपालभ लिख दे।

मारवरा तो लिखकर महल मे बैठ गई। कुरज पख पसार कर उडी।

ढोला महलों में बैठा था। कुरज ने सामने जाकर बाया पख पसारा। ढोला ने उपालभ पढ लिये।

ऊटो से वाडा भरा था। अच्छा सा ऊट छाटा। सौ मे से दस छाटे दस में से एक ऊट छाटा।

ढोला की पत्नी बोली, ऊट, तू ढोला को लेकर मत जा। तू मेरे बाप का दिया हुआ है। मत जा, मैं तुझे नागर वेल खाने को दूगी।

ऊट बोला, सुन्दरी, सुन। मैं तो ढोलाजी के ससुराल जाऊगा। वहा नागर वेल चरूंगा।

ढोला ने ऊट से कहा, मेरी बात सुन। साझ होते होते आज ही तू मुझे अपनी मारवरा से मिला देना।

ऊट बोला, ढोलाजी सुनो। मेरे बायें पैर मे, तुम्हारी पत्नी ने कीला ठोक दिया है उसे निकाल दो। मैं तुम्हे आज ही मारवरा से मिला दूगा। ढोला ने ऊट को बारीक रेत मे बैठाया, बायें पाव से कीला निकाला। दिन भर में जा पहुचाया।

जच्चा

भरने भादरवो अधारी जी रात
किण घर गावे मुन्दर गौरी हालरो जी ।
मोटो जी सहर नै नगर ऐ अजार
घर घर गावे मारूजी हालरो जी
लेवे सुन्दर गौरी म्हारो नाम ए
गोत बखाणे म्हारा बाप रो जी
म्हारे ने मारूजी माता री मतवाळ
किण घर गावे मारूजी हालरो जी
सुधेजी चाल ऊळबाणा जी पाव ए
राजन मे'ला सू हेटा ऊतरिया जी
म्हारोडी नार, हालरिये री माय ए
किसडा ओवरा मे जच्चा राणी पोढिया जी
भागोडी छान टूटोडा किवाड
इसडा ओवरा मे जच्चा राणी पोढिया जी
इसडा ओवरा थारी भेंसिया ने बाधो
थे ई नै पोढोनी रग रा महल मे जो
म्हारोडी नार, हालरिये री माय ए
किसडा ढोल्या पै जच्चा राणी पोढिया जी
टूटोडी ईस नै भाग्योडी जी वाण
इसडा ढोल्या थारी दासिया नै देय

थं ई नै पौढोनी हिंगळु ढोलिया जी ॥
म्हारोडी नार, हालरियै री माय ए
किसडा भोजन जच्चा राणी जीमता जी ॥
पाव भर चवळा पळी भर तेल
इसडा भोजन जच्चा राणी जीमता जी
इसडा भोजन थारी गावडलिया नै देय
थं ई नै जीमोनी ग्रजमो चरपरो जी

भादो की ग्रधेरी रात है। किसके घर जच्चा गाई जा रही है? किसके पुत्र हुग्रा?

पत्नी कहती है, बडा शहर है, घर घर मे स्त्रिया गाती ही रहती है।

नहीं नही, गोरी! स्त्रिया तो मेरा नाम लेकर गा रही है मेरे पिता का गोत्र बखान रही है।

पति को शका हुई वह बिना जूते पहिने ही महल से नीचे उतरा। स्त्रियां हालरा गा रही थी वहा पहुचा। वह उसकी दुहागन पत्नी का घर है। जाते ही पूछा मेरी पत्नी, मेरे बच्चे की माँ किस ग्रोवरे मे सो रही है?

जिसके टूटे किवाड हैं ग्रौर ऊपर छात नही उस ग्रोवरे मे सो रही है। ग्रापकी पत्नी।

ऐसे ग्रोवरे मे भैंसो को बाधो। मेरी जच्चा को रग महल मे पोढावो।

मेरी स्त्री, मेरे बेटे की मा के लिए कौनसा पलग बिछाया है?

टूटी खाट पर जच्चा पडी है।

ऐसी खाट तो दासियो को दो।

मेरी जच्चा को तो हिंगलू पलग पर सुलाग्रो।

मेरी इस पत्नी को कैसा भोजन मिलता था ?

पाव भर चंवले के दाने और एक चम्मच तेल, ऐसा भोजन आपकी जच्चा रानी को दिया जाता था।

यह तो गायों को दे डालो।

मेरी जच्चा के लिए तो बढ़िया अजवाईन लाओ।

* बहु पत्नी प्रथा के भयंकर परिणामों का चित्रण है। एक पत्नी सुहागिन और दूसरी दुहागिन। दुहागिन पत्नी को पशुवत रखा जा रहा है। उसके जच्चा होता है तब जच्चा के गीतों में अपना नाम सुनकर पति जाता है और जच्चा की सुख सुविधा का प्रबन्ध करता है। साथ ही बेटे की मा बनने पर स्त्री की प्रतिष्ठा बढ़ने की ओर संकेत है।

पीळो

सावण वाडी वाइया जो गाढ मारू जी,
गुणसागर ढोला, भादूड कर्‌यो छै नीनाण जी,
वाई का वीरा, पीळो धण ने केसरी रगा दो जी ।।१।।

आसोज वाडी फूल भरी जी गाढा मारू जी,
गुणसायर ढोला, कातिग चूट्यो छै कपास जी,
वाई का वीरा, पीळो धण ने नारगी रगा दो जी ।।२।।

लोढणहाळो लोढगो जी गाढामारू जी,
गुणसायर ढोला, पीनी चतर सुजान जी,
वाई का वीरा, पीळो धण ने केसरी रगा दो जी ।।३।।

कात्यो छै नानो मावसी जी गाढामारू जी,
गुणसायर ढोला, माय अटेर्‌यो छै सूत जी,
वाई का वीरा, पीळो धण ने केसरी रगा दो जी ।।४।।

ताणो तो तणियो मेडते गाढामारू जी.
गुणसायर ढोला, नळाए भर्‌या अजमेर जी,
वाई का वीरा, पीळो धण ने नारगी रगा दो जी ।।५।।

वणियो तो गढ बीकाणैं जी गाढामारू जी,
गुणसायर ढोला, रगियो तो जैसलमेर जी,
वाई का वीरा, पीळो धण ने केसरी रगा दो जी ।।६।।

माय लखोणी बू दडी जो गाढामारू जी,
गुणसायर ढोला, जीरै हुदो भात जो,
वाई का वीरा, पीळो धण ने नारगी रगा दो जी ।।७।।

अल्ला तो पल्ला घूघराजी गाढामारू जी,
गुणसायर ढोला, बिच बिच चाद छपाय जी,
वाई का वीरा, पीळो धण ने केसरी रगा दो जी ।।८।।

रग्यो-रगायो म्हे सुण्यो जी गाढामारू जी,
गुणसायर ढोला, जच्चा के महल पहुचाय जी,
वाई का वीरा, पीळो धण ने नारगी रगा दो जी ।।९।।

हरिये रेसम को घाघरो जी गाढामारू जी,
गुणसायर ढोला, दखणी रो चीर जी,
वाई का वीरा, पीळो धण ने केसरी रगा दो जी ।।१०।।

गळ मे कमूमल काचवो जी गाढामारू जी,
गुणसायर ढोला, अे जी मोतीडा रो हारजी,
वाई का वीरा, पीळो धण ने नारगी रगा दो जी ।।११।।

पैर ओढ जच्चा नोसरी जी गाढामारू जी,
गुण सायर ढोला, सहर नागौर के बजार,
वाई का वीरा, पीळो धण ने केसरी रगा दो जी ।।१२।।

सावन के महिने मे कपास बोया भादो म उसमे नीनाण किया ।
ननद बाई के वीर, अपनी विवाहिता को पीला रगा दो ।
आसोज म कपास के फूल निकले । काती म फूलो का बीना ।
लोढने वाला कपास लाढ गया, चतुरता से कपास पीजा ।
ननद बाई के वीर, मुझे पीला रगा दो ।

मौसी ने बारीक बारीक सूत काता, मा ने सूत अटेरा।

ताना मेडते मे ताना, अजमेर मे नला भरा, बीकानेर मे यह वस्त्र बना और जैसलमेर मे रगा गया।

ननद बाई के वीर, मुझे पीला रगा दो।

सुन्दर रगो से बूदकिया बनाई, जीरा जैसे छोटे छोटे डिजाइन डाले।

पल्लो पर घूघरे लगाये, बीच बीच मे चाद लगाये।

मैंने सुना ऐसा सुन्दर पीला रगा गया है।

गुणो के सागर स्वामी, वह पीला जच्चा के महल मे पहुचा दो।

ननद बाई के वीर, मेरे लिये पीला रगा दो।

हरे रेशम का घाघरा, ऊपर दक्षिणी चीर, कसूमल रग की अगिया और गले मे मोतियो का हार।

पहिन ओढकर, नागौर के बजार मे जच्चा निकली।

ननद बाई के वीर, मेरे लिये पीला रगा दो।

* गहरे पीले रंग की ओढनी जिसके लाल रग के पल्लू तथा किनारे होते है, उस साडी को पीला कहा जाता है। जच्चा दसवें दिन स्नान कर सूर्य पूजा करती है तब पीला ओढाया जाता है।

पीलो

भाभी पाणीडे गई रे तळाव ये भाभी सूवा तो पखो वादल झुक रया जी।

भाभी झरमर झरमर बरसेलो मेह ये भाभी पीळो तो भींजै थारो रग चुवेजी।

देवर भीजै देवर भींजै तो भीजण दो श्रो देवर श्रौर रगावे म्हारी मायडी जी।

भाभी के थानै घडी ए सुनार ये भाभी के थे तो साचै ऊतरी जी।

देवर ना म्हानै घडी ये सुनार श्रो देवर ना म्हे तो साचे उतरया जी।

देवर जनम दियो म्हारी माय श्रो देवर रूप दियो राजा रामजी।

भाभी शीश बण्यो नारेळ ए भाभी चोटी तो कहिय वासग नाग की जी।

भाभी श्राख नीम्बू कीसी फाक ए भाभी भवरा दोन्यू बीजळी खिव जी।।

भाभी नाक सूवै की चाच ए भाभी होठां विडलो रच गयो जी।

भाभी दात दाडु का सा बीज ए जीभडल्या इमरत बसै जी।

भाभी बेलण वेली बाय ए भाभी मू गफली थारी श्रागळी जी।

भाभी पेट गेंहू की लोथ ए भाभी सू डी तो कहिये रतन कचोलिया जी।

भाभी पीठ बणी मखतूल ए भाभी पसव.डा पासा ढळे जी ।

भाभी जाघ केळे का खभ ए भामी पीडी तो कहिये रतनाळियाँ जी।

भाभी पाव पीपळ का पान ए भाभी एडी तो कहिये सुरग सुपारिया जी ।

भाभी धन म्हारे बीराजी रो भाग ए भाभी जाकी तो सेजा सुन्दर थे चढो जी ।

देवर जीवो थे लाख वरस ओ देवर थें म्हारो रूप वखाणियो जी,

चिरजीवो थारा लाल ओ गीगा थें म्हारो मान वढाइयो जी ।

भाभी, पानी भरने सरोवर जा रही हो । गहरी घटा चढ रही है ।
भाभी, झिरमिर झिरमिर मेह बरस रहा है तुम्हारा पीला ओढना भीग जायगा, रग चूने लगेगा ।
देवरजी पीला भीगता है तो भीगने दो। मेरी मा दूसरा रगा कर भेज देगी ।
भाभी सुनार ने तुम्हें गढा है या साचे मे ढाली गई हो ।
देवरजी, न तो सुनार ने गढा है न साचे मे ढली हू । मा ने मुझे कोख मे जन्म दिया है । रूप राजा राम ने दिया है ।
भाभी, तुम्हारा शीश नारियल सा, चोटी वासुकि नाग सी है ।
आख नीबू की फाक सी, भौह मे बिजली सी दमक है ।
नाक तोते की चोंच, होठ तो ताबूल से रचे हैं ।
दात अनार के दाने से, जीभ से अमृत झरता है ।
बेलन से बेला हो जैसी बाहे, मूगफली सी अगुलिया ।
गेहू के आटे की लोय जैसा पेट, उसमे रतन जडा हो वैसी सूडी ।
मखमल की सी पीठ, पसवाडे पासे जैसे ।
केला के स्तभ सी जघा, सुरग सुपारी जैसी एडी ।
भाभी, मेरा भाई सौभाग्यशाली है जिसकी सेज पर तुम पाव देती हो ।
देवर जी, तुम लाख बरस जीओ, तुम्हारा बच्चा चिरायु हो । तुमने मेरे रूप की प्रशसा कर मेरा मान बढाया ।

वीरा

सावण तो श्रायो सई या मैं सुण्यो
श्रायो जेठ श्रसाढ ! मेहो झड मडियो
श्रावो वीराजी वेसो श्राँगणै
पूछो नी मनडे री वात । मेहो झड मडियो
माटी मगावो चिकणी रै
चूल्हा घतावो चार
एकै रघावो लापसी, दूजै तणै रै कसार
तीजै रघावो खीचडी, चौथे चदलै रो साग
साळो वेनोई भेळे जीमलो, करो मनडे री वात
मैलो वेनोई जी म्हारी बैन नै
श्रायोडी सावणीयेरी तीज
म्हारे तो मेल्या साळा नही सजै
कुण जी रै भातो लाय
कुण जी रै पीसै म्हारे पीसणो जी
कुण जी रै महीडो विलोय
वेनड तो पीसै पीसणो
मा थारी महिडो बिलोय
वेनड तो म्हारी, साळा चिडकलो
श्राज उडे परभात ।
मावड, साळा म्हारी डोकरी जी

आटा कौन पीसेगा, दही का बिलौना कौन करेगा ।

तुम्हारी बहिन आटा पीस लेगी, तुम्हारी माताजी दही बिलो लेगी ।

सालेजी, मेरी बहिन तो चिडिया की भाति मेहमान है । कभी भी उड सकती है ।

मेरी मा तो बूढी है, क्या जाने कब मर जाय ।

साला रूठ गया । घोडी पर जीन कस लिया ।

भैया, घडी भर तो घोडे को रोको, मन की बातें तो करलें ।

मैं नगे पाव फिरती हू भैया ।

आक के पत्ते बाध लो ।

मैं आभूषण बिना नगे सिर फिरती हू भैया ।

पीपल के पत्ते बाध लो ।

भैया, मेरा दुख मा को जाकर मत बताना । वह रोयेगी जैसे बरसात की झडी लगती हो ।

भैया, भौजाई को मेरा कष्ट मत बताना । वह अपने पीहर वालो को सुना कर मजा लेगी ।

भैया, मेरे पिताजी को जरूर कहना । वह तुरत घोडे पर जीन कस लेंगे मुझे लिवा लाने को ।

म्हारी धरण मोटा

सुसराजी जाजो डूगरा
काई लाजो चनण रो रुख
कुरियो रे गुरवेली रो

काठ घडाजो पालणो काई
म्हे जास्या चणा रे खेत
कुरियो रे गुरवेली रो

माथे लीधो पालणो रा
जास्यां ओ चणा रे खेत
कुरियो रे गुरवेली रो

आवें बाधूं पालणो काई
चपले खेंचूं डोर
कुरियो रे गुरवेली रो

आवें बाधू पालणो काई
एक मचोळो दे म्हारा वीर
कुरियो रे गुरवेली रो

सासू पूछें ए बहू
म्हारा बाळो पूत रुंवाण्यो काय
थारो कीको लाडलो

म्हारी ग्रंदली बंदली निरखै काय
कुरियो रे गुरवेली रो

नणदल पूछै ये भावज
म्हारो बाळो वीर रुंवाण्यो काय
थारो वीरो लाडलो
म्हारी पायळ मे पग घाले काय
कुरियो रे गुरवेली रो

साथी पूछै रे गोठिया
थू रात्यूं रोयो काय
कुरियो रे गुरवेली रो

म्हे छोटा म्हारी धरण मोटा
म्हाने बाध्यो ढोल्या सू खाच
ग्रौर मरोड्या गालडा ग्रो
दीधी रैपट री खाच
कुरियो रे गुरवेली रो

ससुरजी, पहाडो पर जाग्रो। चदन का पेड ले ग्रावो। चदन के काठ का बाल पति के लिये पलना बना लू।

मुझे चने के खेत पर जो जाना है।

पलना सिर पर रख बाल पति को ले चने के खेत पर ग्राई।

ग्राम की डाल के पलना बाध दिया, चपे के वृक्ष से डोर खैंचूगी।

ग्राम की डाल के पालना बाध कर झूलाने लगी।

सासु ने पूछा, बहू मेरे बेटे को तू ने रूलाया क्यो?

तुम्हारा लाडला बेटा मेरी बिंदी क्यो निरखता है।

ननद पूछने लगी, भाभी, मेरे मुन्ना भाई को तू रूलाती क्यो है ?

तुम्हारा लाडला भाई मेरे पाजेब मे पाव क्यों अडाता है ?

बाल पति के साथियो ने पूछा, दोस्त, तू रात को रोया क्यो था ?

बाल पति ने उत्तर दिया, मैं तो छोटा हू मेरी पत्नी बडी है ।

उसने मुझे पलग से कसकर बाध दिया, उसने मेरे गाल मरोडे, कस कर मुह पर तमाचा मारा ।

---

* अनमेल विवाह पर यह गीत करारा व्यंग है । पत्नी युवा है और पति बच्चा । ऐसे अनमेल विवाह गांवों में कभी कभी होते रहते हैं ।

जवांई

म्हारे आगण ढोला बाई वड बोर
जेरी रे छाया मे सहेलिया दातण मोडियो ।

कात्यो कतवारया नेनो सूत
कातने वणाई सा फामडी ।
जुग जीवो सुसरा जी रा पूत
भाड ने ओढाई वेनोई ने फामडी

आछो रे थारो देस जिके मे
चार दिन जवाई जी मालिया
आछो रे समदरिया थारो नीर
जिके मे घुडला पाइया ।

आछी रे पीपळिया थारी छाय
गैरी छाया घुडला थामिया

वायरा धीमो मधरो वाज
चढता उडै जवाया री फामडी

आछो रे तावडिया, धीमो मधरो तप
हलक पसीजे कवर वाई रो साथ

विजळिया ए धीमो मधरो चमक
चढता नैं चमकै जवांई रो घोडलो

मेवडला रे धीमो मधरो बरस
चढता रे भीजै बाई री बोरग चू दडी ।

प्रियतम, मेरे आँगन मे, बढे बेर का वृक्ष है। जिसकी गहरी छाया में सखियें आती है।

मैंने महीन महीन सूत कात कर फामडी बनाई।

जुग जुग जीवें, मेरी सास के पूत। उन्होने भाड कर उस फामडी को बहनोई को ओढा कर सीख दी।

तुम्हारा देश अच्छा है, जहा जवाई ने चार दिन आनन्द किया। इस सागर का पानी भी अच्छा है। जवाई ने इसी मे अपनी घोडी को पानी पिलाया। इस पीपल की छाया म उन्होने अपने घोडो को, विश्राम देने को रोका था।

ननद और जवाई जा रहे हैं। भावज वायु से धीरे धीरे बहने को प्रार्थना करती है जिससे जवाई की फामडी उड न जाय।

ताप! तू बडा अच्छा है, धीरे धीरे तप, ननद बाई का कण्ठ सूख जावेगा।

विजलियों! धीरे धीरे दमको। कही जवाई जी का घोडा चमक न जाय।

मेह! तुम मधरे मधरे बरसना। ननद बाई की बहुरग चूदडी भीग न जाय।

सियालो

किस्या रे नगर सू आयो रे सियाळो
तो घर कूणी जी रे जाइयो भवर जी
यो जाडो सेलीवाळा नै लागै

धार नगर सू आयो रे सियाळो
तो घर रावजो रे जाइयो भवर जी
यो जाडो सेलीवाळा नैं लागै

सोना री सगडी जडाऊ रा दूदया
तो ई म्हारो जाडो नही जाइयो भवर जी
यो जाडो सेलीवाळा नै लागै

सोना री चुसकी जडाऊ रा प्याला
तो ई म्हारो जाडो नही जाइयो भवर जी
यो जाडो सेलीवाळा नै लागै

रमझम करता लाडीसा पधारिया
अबे म्हारो जाडो जाइयो भवर जी
यो जाडो सेलीवाळा नै लागै

किस नगरी से यह जाडा आया है और किसके घर जायेगा ?

धार नगर से यह जाडा आया है और रावजी के घर जायेगा ।

सोने की अगीठी है और रत्नजडित अगारे है, फिर भी मेरा जाडा जा नही रहा है ।

सेली पहिने पुरुष को ठण्ड लग रही है । स्वर्ण पात्र मे मद भर कर पीने पर भी तो मेरी ठण्ड दूर नही हुई ।

सब उपाय किये पर जोर से ठण्ड लग रही है । रिमझिम रिमझित करती प्रियतमा आ गई है, अब मेरा जाडा दूर हो जायेगा ।

नूंतो

म्हारे राजा हरिया सा डूंगरा ने नुवतिया
म्हारे राजा तोरण थाव ले घर आविया
म्हारे राजा पीछोला जस्यो सागर नुवतियो
म्हारे राजा नीर सजोवण जोगो
म्हारे वेलडियाँ घर छावियो
म्हारे राजा रावतजी रा पूत ने नुवतिया
म्हारे राजा जान सजोवण जोगो
म्हारे राजा व्याइसा रा जवाईसा नुवतिया
म्हारे राज बनोळी सजोवण जोगो
म्हारे वेलडियाँ घर छावियो
म्हारे राजा वीरा जी ने नुवतिया
म्हारे राजा मायरा सजोवण जोगो

विवाह के उत्सव म मैंने हरे भरे पहाडो को न्योता दिया है।
वे घर मे तोरण और स्तभ लेकर आये।
मैंने विवाह मे पीछोला सरोवर को आमन्त्रित किया।
वह जल देने को पूरा सामर्थ्यवान है।

मेरे घर मे लतायें छा गई।

मैंने राजाओं के पुत्रों को न्योता दिया।

वे बरात मे सजधज कर आयेंगे।

मैंने अपने सगे के पुत्र तथा मेरे जामाता को आमन्त्रण दिया।

वे बनोळी निकालने की सामर्थ रखते हैं।

मैंने अपने भाई को नूता है। वह मायरा भरेंगे, मायरा भरने को पूर्ण सामर्थवान है।

मेरे घर मे लतायें छा रही है।

आरती

मादेवजी पूछेरा सुणो पारवती
कू कर आरती सजोवस्यो
सोना की थाळी ने रूपा री झारी
यू कर आरती सजोवस्यां

सोना रा दीवला ने रूपा री वाती
यू कर आरती सजोवस्या
मोत्या रा आखा ने सीप जो घोळी
यू कर आरती सजोवस्या

आरतडी राजा राज दीवाणा
जणी घर विडद ऊतावळी जी
थें तो झूठा हो पारवती झूठ जे बोल्या
दुनियाँ में काई वण आवसी जी
कासी की थाळी ने पीतळ की झारी
यू कर आरती सजोवस्या
अन्न का तो आखा ने सीप भर रोळी
माटी रो दीवो रूई री बाती
यू कर आरती सजोवसी जी

साचा ओ पारवती साच जे बोल्या
दुनिया मे या ही वण आवसी जी

महादेवजी ने पूछा, पार्वती आरती क्योकर सजोई जाती है ?

पार्वती ने उत्तर दिया, सोने की थाली, चादी की झारी ले आरती सजोई जाती है।

सीप मे कु कुम घोल, मोतियो के अक्षत ले स्वर्ण दीप मे चादी की बत्ती से आरती सजोई जाती है। जिस घर मे विवाह की विडद बैठेगी वहा इस प्रकार आरती उतारी जाती है।

महादेव ने कहा, पार्वती, तुम झूठी हो। झूठ बोला तुमने। यह बताओ। वास्तव मे ससार मे कौनसी वस्तुयें लोगो को मिलती है आरती उतारने को।

पार्वती बोली, कासी की थाली, पीतल की झारी, अन्न के अक्षत, सीप भर रोळी, माटी के दीपक मे रूई की वाती से आरती उतारी जाती है।

अब सच बोली पार्वती तुम। वास्तव मे ससार मे यही वस्तुयें लोगो को मिल पाती है।

वनड़ो

पेचा बाधे कसन सावरा तुरिया पेरे घर कसनार
वना तो म्हारा रामचदर अवतार
वना तो म्हारा सरी विसन अवतार
वना री घोडी रिमझिम करती जाय
गुलाला गिरद उडाया जाय
पतासा मेह वरसायां जाय
नाळ रा कोट चिणाया जाय
वना री घोडी रिमझिम करती जाय

कृष्ण सावरा की भांति पगडी बांधता है घर की नारियां तुरियां पहनती है।
मेरा बनां रामचन्द्र का अवतार है।
बना की घोडी रिमझिम रिमझिम करती चलती है।
गुलाल की गिद उडाये जा रही है।
बतासो का मेह बरसा रही है।
नारियला का कोट चुनाती चली जा रही है।
बना की घोडी रिमझिम करती चली जा रही है।

लाडा ऊभा ऊमरण दूमरणा

लाडा ऊभा श्रो मॉडपणा हेट ऊमरण दूमरणा

लाडा कै मागे श्रो तरवार कै घोडो हाँसलो

म्हें तो नही मागा श्रो तरवार नी घोडो हासलो

म्हे तो मागा मेवाड़ा री धीय चित्तोडी लाडी चित चढी

लाडी ऊभा श्रोवरिया रे बार ऊमरण दूमरणा

कै मागे चन्दरहार कै मागे दाती चूडलो

म्हे तो नी मागा हो चन्दर हार नी मागा श्रो दाती चूडलो

म्हे तो मागा राठौडी राज सोजतियो चित चढ गयो जी

बनडा उदास उदास खडा है।

क्या चाहिये तुम्हें। तलवार ? बढिया घोडा ?

मुझे तो न तलवार चाहिये श्रौर न बढिया घोडा।

मुझे मेवाडी वीर की बेटी चाहिये वह चित्तोडी मेरे चित चढ गई है।

बनड़ी ओवरिया के बाहर सुस्त उदास खड़ी है ।

क्या चाहिये तुम्हें । चन्द्रहार ? हस्तीदांत का चूड़ा ?

मुझे तो न चन्द्रहार चाहिये और न हस्तीदांत का चूड़ा ।

मुझे तो राठोड़ी बनड़ा चाहिये वह सोजनिया मेरे चित चढ़ गया ।

---

* विवाह के समय गाये जाने वाले गीत हैं ।

बनड़ा बनड़ी वर वधू का सम्बोधन है । चित्तौड़ी तथा मेवाड़ी वही कन्या कहलाती है जो शिशोदिया वंश की हों ।

इसी प्रकार राठौड़ी तथा सोजतिया, राठोड़ वंश का व्यक्ति ही कहलाता है ।

वनौ

थँ तो किण री मजला आया जी वना
थे तो किण रे भरोसे घर छोडयो जी वना
म्हे तो दादोसा री मजला आया ए वनी
म्हे तो माता सा रे भरोसे घर छोडयो ए वनी
म्हे तो काकोसा री मजला आया ए वनी
म्हे तो काक्या रे भरोसे घर छोडयो ए वनी
थारी माता सा रो काई रे भरोसो जी वना
थारी काक्या रो काई रे भरोसो जी वना
वै तो खावे ने लूटावे घर म्हारो जी वना
वै तो खुवावे नै बिगाडे घर म्हारो जी वना
असी जाणती माया मैं मू डै बोलतो जी वना
थे तो जान्या पली रथ म्हारो हाको जी वना
मैं तो जावू नै अवेरु घर म्हारो जी वना
म्हू तो जावू ने सभाळू घर म्हारो जी वना

•

दुलहिन, दूल्हे से पूछती है, वना, तुम यहा किसके साथ मजिलें तै करते आये हो ? घर को किसके भरोसे छोड कर आये हो ।

बनो, मैं पिता के साथ, चाचा के साथ मजिलें तै करता यहा आया हू । घर मा के और चाची के भरोसे छोडा है ।

तुम्हारी माता का क्या विश्वास। तुम्हारी चाची का क्या भरोसा। क्या जाने वे खाती होगी खिलाती होगी और फिजूल खर्च करती होगी। अब तो घर मेरा है।

ऐमा पता होता तो मैं तुम्हारे यहा आते ही, ब्याह से पहले ही तुमसे बात कर लेती।

मुझे तो जल्दी लग रही है, कब जाऊ और अपना घर सभालू। बरातियो से पहले मेरा रथ रुकवादो।

* विवाह के कुछ दिन पहले ही गणेश स्थापना के साथ ही गीत गाये जाने प्रारम्भ हो जा हैं। बना से अभिप्राय वर का और बनी से वधू का अभिप्राय होता है।

कांमरा

धीरा रो रे नादान कामरा आज करू ली
म्हारा दादोसा री पोळ छडीदार राखूंली
छडीदार राखू ली के चोबदार राखूंली
म्हारा काकोसा री पोळं था ने चाकर राखूंली
धीरा रो रे नादान कामरा आज करूंली
थोडा सा आज करूंली थोड़ा सा काल करूंली
होळी री रात करूंगी पून्यूं री परभात करू ली
समी साभ करूंली आधी रात करूंली
धीरा रो रा नादान कांमरा आज करूंली
म्हारा वीरा सा री पोळ चरवादार राखूंली
चरवादार राखूंली के हुक्कादार राखूंली
पैरादार राखूंली के पाळा ढोळ राखूंली
छड़ीदार राखूंली के चोबदार राखूंली
म्हारा वीरो सा री पोळ थाने चाकर राखूंली
धीरा रो रा नादाव कामरा आज करूंली ।

नादान जरा ठहरो, कामण तो अब कर रही हू ।

मेरा पिता के दरवाजे पर तुम्ह छडीदार बना कर रखू गी ।

मेरा चाचा के दरवाजे पर तुम्ह चाकर बना कर रखू गी ।

नादान जरा ठहर जाओ । तुम पर कामण अब करू गी ।

थोडे से कामण आज करू गी, थोडे मे कामण कल करू गी ।

होली की रात को करू गी, कुछ दिवाली के प्रभात को करू गी ।

साझ पडते ही कुछ कामण करू गी । आधी रात को करू गी ।

जरा ठहर जाओ, तुम पर ऐसे कामण करू गी, मेरे भाई के दरवाजे पर तुम्हे चरवादार बना कर रखू गी । पहरादार बना कर रखू गी ।

जरा ठहर जाओ, तुम पर कार्मण अब करू गी ।

कांमरण

कोरी कोरी कुलडी मे दहीडो जमायो राज
आज म्हारा राईवर ने दादोसा रे घर नू त्या राज
माऊ सा नू त जीमाया राज
राती दगली रातो सूत
बाधो रा सासूजी रा पूत
बाध्या चू ध्या करे सलाम
एक मलाम भाई दूसरी सलाम
तीसरी सलाम थारा बाप का गुलाम
छोड ए दादोसा री प्यारी
अब तो थारा चाकर राज
चाकर छा तो पैली केता
अब तो कामण घुळग्या राज
ऐसा कामण म्हारा राईवर ने सोवे

नये नये कुल्हडो मे दही जमाया ।

राईवर को मेरे पिता ने अपने घर आमन्त्रित किया भोजन करने को ।
माता ने भोजन कराया ।

लाल रग की रूई है, लाल रग का सूत है। इससे सासूजी के पुत्र को बाधती हू। सूत से बधे ये सलाम करते हैं।

एक सलाम, दूसरी सलाम, तीसरी सलाम के साथ उन्होंने कह दिया तेरे पिता का दासानुदास हू।

पिता की लाडली, अब मुझे छोड दे। मैं तेरा दास हू।

यदि आज्ञाकारी थे तो पहले कहते। अब तो जादू चढ गया।

ऐसे कामण मेरे राइवर को शोभा देते है।

---

* लडकी के विवाह के समय कामण गाये जाते हैं। जादू टोना को 'कामण करना' कहा जाता है। पति वश में रहे यही कामण का तात्पर्य है।

घोड़ी

गढ मुलतान सू आइ ओ वछेरी तो आइ आइ बाबाजी रे दरवार
म्हारा राइवर बदडा नै सोवै ओ वछेरी
कंर कै खू टै बाघो ओ वछेरो तो नीरो नीरो नागरबेल म्हारा०
तो नीरो नीरो हरी हरी दोव हरी हरो दोव न चरै ओ बछेरी
तो मागै मागै पीळी पीळी दाळ म्हारा राइवर
पीळी पीळी दाळ न चरै ओ वछेरी तो मागै मागै राती पीळी झूल
म्हारा राइवर बदडा नै सोवै ओ बछेरी
राती पोळी झूल न ओडै ओ वछेरो तो मागै मागै लाडलडो असवार म्हारा०
म्हारा बचळ भर बदडा ने सोवै ओ वछेरी

गढ मुलतान से बछेरी आई । मेरे पिता के दरबार मे यह बछेरी आई ।
मेरे राइवर बनडा को शोभित करेगी ।
कंर के खूटे पर इसे बांधो, नागर बेल चरने को दो ।
इसे हरी हरी दूब खिलाओ । हरी हरी दूब यह नही चरेगी ।
यह पीली पीली दाल मांगती है ।
नहीं, नही पीली पीली दाल नही खायगी ।
यह तो लाल पीले रग की झूल चाहती है ।
लाल पीले रग की झूल यह नही ओढ़ेगी इसे तो शानदार सवार चाहिये ।
यह बछेरी मेरे राइवर के चढ़न योग्य है ।

घोड़ी

घोडी गढा सू उतरी ग्रो केसरिया जी कोई तेजण तिलक ललाड
तेजण जव चरे ग्रो हरिया चरे ग्रो केसरियाजी चरे ग्रो लीलोडा नाळेर
घोडी रो नेवर बाजणा ग्रो कसरियाजी कोई मेहदी राता केस
पूठ पलाणो सोवन जडियो जी कोई गजब करे जीण पोस
तेजण जव चरे ग्रो हरिया चरे कोई पीवे ग्रधरडियो दूध
मुखीयडलो मोतिया जडियो ग्रो केसरियाजी कोई हीरा जडी लगाम
पाव धरे रव चन्दर चढे ग्रो केसरियाजी कोई परणीजे राजकु वार
दसरथ जी रो पोता चढे ग्रो केसरियाजी कोई जनकजी रा दोयता
उऊड धुकड छाटा पड ग्रो केसरिया जा काई भीजे केसरिया री जान
दे दे नगारा चढ गया ग्रो केसरियाजी काई जानिया ने पेवा बधाय
परण वरण घर ग्राविया ग्रो केसरियाजी काई दे दे नगारा की ठौर
बेनड वाई मागे काई ग्रारती ग्रो केसरियाजी सोदरा लूण उतार
थाळ भरो गज मोतिया ग्रो केसरियाजी बेनडल्या वीर बधाय ।
वाहर हरखिया जानिया जी ग्रो केसरियाजी कोई घर मे वना सारो माय
तेजण जव चरे ग्रो हरिया चरे कोई पीवे ग्रधरडियो दूध
तेजण जव चरे जी ।

घोडी गढ़ से उतरी, उसके ललाट पर तिलक लगा हुआ हूं।

घोडी हरे जौ चरती है, हरे नारियल खाती है।

घोडी के नेवर बजने वाले हैं, मेंहदी से उसके केश रंगे हुए हैं। घोडी हरे जौ चरती है।

रत्न जड़ित घोडी का जीन है, बहुमूल्य जीन पोस है।

घोडी हरे जौ चरती है औटा हुआ दूध पीती है।

उसका मुख मोतियो से और लगाम हीरों से जडी है, सूरज चन्द्र के समीप जाकर पांव धरती है, ऐसी घोडी पर केसरिया सवार हो विवाह करने चला है। मेरी घोडी हरे जौ चरने वाली है।

दशरथ का पोता और जनक का नाती इस घोड़ी पर चढा है। घोडी हरे जौ चरती है।

रिमझिम मेह बरस रहा है केसरिया की बरात भीग रही है।

नगारे बजाते केसरिया जी घोडी पर सवार हो गये बराती लोगो ने पेचे (पागें) बाध रखी हैं।

विवाह करके नक्कारे बजाते बरात घर लौटी।

बहिनें आरती कर रही है, सहोदर नमक उतार रही है।

मोती से थाल भर बहिनें भाई को बधा रही है।

बाहर बराती हर्षित हो रहे हैं, घर के भीतर बने की माता जी आनन्दित हो रही है।

घोडी हरे जौ चरती है औटाया हुआ दूध पीती है।

तोरणियो

खातीड़ा रा वेटा चतर सुजाण

तोरणियो घड ला दे म्हने चदण के रे रूख को हो राज

तोरणियो वधावू गढ़ रे भीत

घणी ए चोळी जावू रे वाहडली पसार

सैणालो तोरण वाधियो

मोतीड़ा सू तपे म्हारे वना सा रो लिलाड

सिर सोने रो सेवरो

मोतीड़ा सू थाळ भरे

करू रे हरियाळा वना री आरती हो राज

तारा सू छाई सीयाळा री रात

घणी ए घुळी जावू

फूला सू छायो म्हारे वना रो सेवरो हो राज

ससरो रे वना सा रे जानीड़ा री जोड

जानीड़ा सिणगारिया रे वना रे जोड रा हो राज

खाती का बेटा चतुर सुजान है। चंदन के पेड़ का तोरण बना कर लाओ।

गढ की भीत पर तोरण बांधूंगी।

बाहु उठा कर नेह भीने ने तोरण बाधा। मैं उस छवि पर निछावर हूं।

बना का ललाट मोतियो से सुशोभित है।

सिर पर सोने का सेहरा है।

उस हरियाले बना पर मैं मोती भरे थाल से आरती उतारती हूं।

हेमन्त की रात्रि सितारो से जडी है।

बना का सेहरा फलो से जडा है। वारी जाती हूं।

बना के साथ मे बराती सजे धजे है। बना के साथियो की जोड़ भी बडी सुन्दर है।

सीध चाल्या

आंबो पाक्यो ओ आमली
पाक्यो नींबूड़ा रो रूंख
म्हे थांने पूछा हो, राधा बाई !
इतरो बाबाजी रो हेत

छोड़'र बाई । सीध चाल्या

है आयो परदेसी सूवटो
लेग्यो टोळी में सूं टाळ
कोयलड़ी अघ बोली
आपरा माऊजी रो लाड

छोड़'र बाई सीध चाल्या ।

आयो सगां रो सूवटो
लेग्यो टोळी सूं टाळ

कोयल बाई सीध चाल्या ।

बाई ! अपने पिता का इतना स्नेह छोड तुम कहां चल दी ?

परदेशी सूवा आया है वह मुझे अपनी टोली मे से अलग कर ले चला ।

मुझे यह बताओ । अपनी माता का अथाह स्नेह छोड़ तुम कहा चल दीं ?

सगो का सूवा आया है । वह टोली मे से मुझे लिये जा रहा है ।

कोयल बाई तुम कहा चली ?

* बेटी के विवाहोपरान्त विदा के समय गाया जाता है। कन्या को कोयल और उसे ले जाने वाले को सूवा (तोता) की संज्ञा दी गई है।

बधावा

हिलोए, मिलो ए सहेली
रग रो बधावो म्हारे आवियो

सहेली बागा मे चालो ए
आपा आछी आछी कळिया चूंटा ऐ
कळिया ने सहेली काई करसा
आपा आछा आछा गजरा गू था ए
सहेली रग रो बधावो आवियो

गजरा गूंथ नै काई करसा
आपा आलीजा री सेज सजावा ए
सेज सजाई नै काई करसा
आपा सुसरा जी रो वश बधावा ए
सहेली रग रो बधावो आवियो

वस बधाई नै काई करसा
आपा ऊजड खेडा वसावा
सहेली रग रो बधावो आवियो

सखियो ! आओ, हिलमिल हम लोग, आनन्द और प्यार की सृजना करें।

सखी, बागो मे चलें, सुन्दर सुन्दर कलियें तोड़ेंगी।

कलियो का क्या करेंगी ?

अच्छे अच्छे गजरे गूथेंगी।

गजरे गूथ कर क्या करेंगी, सखी ?

आलीजा की सेज सजावेंगी।

सेज सजाकर क्या करेंगी ?

ससुर जी का वंश बढायेंगी।

ससुर जी का वंश बढाने से क्या होगा ?

सखी, इन उजड़े गावो को फिर से बसायेंगी।

सखियो आवो, हम आनन्द और प्रेम की सृजना करें।

---

* शुभ अवसरों पर गाने वाले गीत बधावा कहलाते है। बधाई देना तथा शुभ कामनायें प्रकट की जाती है। इसमें सुखी गार्हस्थ्य जीवन तथा संतान प्राप्ति की शुभ कामनायें है।

वधावो

ओवरियो गरणायो जी म्हारा दुवारा पे
छायो जी मरवो मोगरो
पाच वधावा जी म्हारे आईया
पाचा की न्यारी न्यारी भात
ओवरियो गरणायोजी म्हारा दुवारा पै
छायो जी मरवो मोगरो

पेलो वधावो जी म्हारा वाप को
दूजो सुसरो जो दरवार
ओवरियो गरणायो जी म्हारा दुवारा पै
छायो जी मरवो मोगरो

ऊगण्यो वधावो जी म्हारा वीर को
चौथो जेठ दरवार
ओवरियो गरणायोजी म्हारा दुवारा पै
छायो मरवो मोगरो

तीजो वधावो जो धरण रा म्हेल को
पौढे म्हारी सासु जी का पूत
ओवरियो गरणायो जी म्हारा दुवारा पै
छायो मरवो मोगरो

चौथो वधावो जी धरा री कूंख को
जाया छै लाडलडा पूत
ओवरियो गरणायो जी म्हारा दुवारा पै
छायो मरवो मोगरो

पाचवो वधावो जी धरा रा चौक रो
बैठे जो देवर तो जेठ
ओवरियो गरणायो जी म्हारा दुवारा पै
छायो मरवो मोगरो

मेरा घर द्वारा मरवा, मोगरा आदि पुष्पो की महक से गमक रहा है।

पाच वधावे अर्थात पाच मगल मेरे घर मे हो रहे हैं। पाचो बधावे विभिन्न प्रकार के हैं।

मेरा घर मरवा मोगरा पुष्पों की गध से गमक रहा है।

पहला वधावा मेरे पिता का दरबार है। मेरे श्वसुर के दरबार का है।

पुष्पो की गन्ध से मेरा घर द्वार सुगन्धित हो उठा है।

दूसरा वधावा मेरे भाई का, मेरे जेठ का दरबार है।

मरवा मोगरा की महक से घर गमक उठा है।

तीसरा बधावा मगल स्थान मेरा महल है जहां मेरी सास के पूत आकर पोढते हैं।

चौथा वधावा मेरी कोख का है। लाडले पूतो को मैंने जन्म दिया।

मेरा घर द्वार फूलो से महक रहा है।

पाचवा बधावा, मेरे घर का चौक है जहा देवर जेठ तथा समस्त परिवार बैठता है।

मेरा घर द्वार मरवा मोगरा आदि फूलो की महक से गमक रहा है।

भावज

श्रव मोय चूडलो पैरावो ।
म्हारा जामरण जाया चू दडी श्रोढावो, राज

सात सोपारी नैं मारणक मोती
तो बाईजी वधावो लाई
श्रदन वदन री टोपी लाई
मैं तो दरियाई रो वागो

म्हारा जामरण जाया चू दडी श्रोढावो

ऊची सी मेडी श्रजव झरोखा
कैल झवूकै वाररणै
वो घर दीसै थारा वडोड वीरा रो
वा ऊभी भोजाई

म्हारा जामरण जाया

काकी नै वडिया हस-हस वोलो
तो माय करै रै वधाई
वडोडी भावज मारे मु ह मचकोल्यो
म्हारो नरणद किसै गुरण श्राई

म्हारा जामरण जाया

तू मत जारण म्हारी भोळी ए भावज

नणद रूस्योड़ी ग्राई
लाख मोहर रो घर भर छोड़ियो
थारी कीरत जोवण ग्राई

म्हारा जामरण जाया

जैरे जाणू म्हारी नणदल ग्रावती
तो परतन महला जाती
पूत जणन्तो धीयडी जणती
म्हारी नणद किसे विध ग्राती

म्हारा जाँमरण जाया—

भाई के पुत्र हुग्रा है, ससुराल से बहिन भतीजे के लिये वस्त्राभूपरण लेकर ग्राती है विदा मे भाई को भी बहिन को चूडा पहिनाना, चूदडी ग्रोढा सीख देनी होती है ।

माणिक मोती, सात सुपारी, बढिया सी टोपी ग्रौर वागा ले वहिन पीहर पहुचती है ।

यह ऊची मेडी, जिसके सुन्दर गोखे हैं, वाहर कदली वृक्ष झौंके खा रहा है, ऐसा उसके भाई का घर दिखाई दिया । बाहर भौजाई खडी है ।

काकी, बाबी हस हस बातें करने लगी, मा हर्ष से खिल उठी । किन्तु भौजाई ने तो मुह बिचकाया यह ननद यहा किस लिये ग्राई ।

भावज का यह ढग देख ननद बोली, "ग्ररी भोली भावज, तू समझती होगी ननद ससुराल से रूठ कर या ग्रनादृत ग्राई होगी । लाखो मोहरो से घर भरा है मेरा ! मैं तो केवल तेरे गुण देखने ग्रा गई ।"

ईर्ष्यालु भावज कहती है, "यदि मुझे पता होता कि मेरे पुत्र को जन्म देने से यह यहा ग्रावेगी तो मैं महलो मे ही न जाती । यदि जाती भी तो पुत्र को जन्म न दे बेटी ही जणती, फिर ननद कैसे ग्राती यहा ?

* भाई के पुत्र जन्मोत्सव पर बहिन आती है । भौजाई को ननद का आना नहीं भाता । यह गीत भौजाई और ननद के संघर्षों और पारिवारिक जीवन पर प्रकाश डालता है ।

बीजळ

म्हारी रे बीजळ नैं आणोजी आया
जाई म्हारी बीजळी सासरे
आणा तो बाबोसा पाछा जी मेलो
नही जावैं बीजळ सासरे
म्हारी रे बीजळ ने हस्ती जी देस्या
जाई म्हारी बीजळ सासरे
हस्ती तो म्हारा बाबोसा चढसी
नही जावै बीजळ सासरे
म्हारी रे बीजळ ने घोडा देस्या
जाई म्हारी बीजळ सासरे
घोडला तो बीजळ रा काकोसा चढसी
नही जावै बीजळ सासरे
म्हारी रे बीजळ ने वैहल्या जी देस्या
जाई म्हारी बीजळ सासरे
वैहल्या तो बीजळ रा करसा खडसी
नही जावै बीजळ सासरे
म्हारी रे बीजळ ने सोनो देस्यां
जाई म्हारी बीजळ सासरे
सोनो तो बाबोसा घरे जी राखो
नही जावै बीजळ सासरे

म्हारी रे बीजळ ने भाटा जी देस्या
जाई म्हारी बीजळ सासरे
भाटा तो बाबोसा घरे ही राखो
बीरोसा रे गढ चुणावसी
परी जासी ए बीजळ सासरे

बीजल बेटी, तुम्हे गौना लेने आये हैं। बेटी, जा ससुराल चली जा। *बाबुल, गौना लेने आये उन्हे वापिस लौटा दो। बीजल ससुराल नही जायगी।*

मेरी बीजल, चली जा ससुराल तुझे हाथी दूगा।

हाथी पर मेरे पिताजी चढेंगे। बीजल ससुराल नही जायगी।

मेरी बीजल, ससुराल चली जा तुझे घोडे दूगा।

घोडो पर मेरे काकाजी चढेंगे। मैं ससुराल नही जाऊगी।

मेरी बीजल, चली जा ससुराल। तुझे बैल दूगा।

बैलो को मेरे किसान खेत मे जोतेंगे। बीजल ससुराल नहीं जायेगी।

बीजल, तुम्हे सोना दूगा। ससुराल चली जा।

बाबोसा, सोना अपने घर मे ही रखो। मैं ससुराल नही जाऊगी।

पिता चिढकर बोला, बीजल को पत्थर दूगा। जा चली जा।

बीजल ने उत्तर दिया, पत्थर घर मे ही रखो। भाई के लिए गढ बनाने मे काम आयेंगे।

बीजल अपने ससुराल चली जायेगी।

गणगौर

थाने गेला मे होसी गणगौर
या ही रेवो, या ही रेवो, या ही रेवो जी,
थाने गेला मे होसो गणगौर
म्हारा लखपतिया जी, या हो रेवो जी

जावा दो नखराळी नार जावा दो
जावा दो छन्दगाळी नार जावा दो
म्हारा भायला ऊभा न्हाळे वाट
म्हारी मिरगानेणी जावा दो
म्हारा साथीडा ऊतरया चबल पार
म्हारी चदरा बदणी, जावा दो
थाने गेला मे होसी गणगौर
या ही रेवो, या ही रेवो, या ही रेवो जी।

यही रहो। कहा जा रहे हो। गणगौर का त्योहार आ रहा है। मार्ग मे गणगौर मनाओगे क्या? मेरे लखपतिया, यही रहो।

नखराली, मुझे जाने दे। छिन्दगाळी मुझे जाने दे। मेरे साथी खडे मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

मृगनयनी, मुझे जाने दे। मेरे साथी चबल पार उतर गये होंगे। चन्द्र वदनी मुझे जाने दे।

गणगौर के त्योहार पर तुम मार्ग में रहोगे। मत जावो।

यही रहो, यहीं रहो, यही रहो।

राज रे दूणो नेह लगाय

अनोखा कु वरजी हो राज रे दूणो नेह लगाय
जी धण फूला जैंसी फूटरी
राज रा पेचा माय राख

अनोखा कु वरजी हो राज रे दूणो नेह लगाय
जी धण सुरमा जैंसी सावळी
राज रा नैणा माय राख
धणवाळाजी हो दूणो नेह लगाय
जी धण केसर जैंसो ऊजळो
राज रा ललवट ऊपर राख

अनोखा कु वरजी हो दूणो नेह लगाय
जी धण पाना जैंसी पातळी
राज रा मुखडा माय राख
धणवाळाजी हो दूणो नेह लगाय
जी धण लू गा जैंसी चरपरी
राज रा प्याला माय राख

अनोखा कु वरजी हो दूणो नेह लगाय
जो धण वरछी जैंसी लळबळी
राज री मुट्ठी माय राख
धणवाळाजी हो दूणो नेह लगाय

अनोखे कुंवरजी, आपकी पत्नी फूलो जैसी सुन्दरी है।

अपनी पगड़ी के पेचोमे इसे सजाकर रखना।

इसे अपना दूना प्रेम देना।

आपका प्रेयसी सुरमा जैसी सावली है।

इसे अपने नयनो मे बसा दुगुने स्नेहसे रखना।

यह केसर के समान उज्ज्वल है।

इसे अपने ललाट के ऊपर लगाकर रखना।

यह पान जैसी पतली है, इसे मुह मे रखना।

लौंग जैसी चरपरी है, इसे प्याले मे रखना।

तुम्हारी प्यारी बर्छी जैसी है, इसे हाय मे रखना।

इसे दूने स्नेह से रखना।

झालो

थें तो म्हारे आवजो रे महाराजा पावणा
घणरे घोडा रे घमसाण रे मृगानैणी रा ढोला
मेडी रे चढती नै म्हासू झालो सहियो नी जाय

आवता जाणू तो रे महाराजा साम्ही दासी मेलू
साम्होडी मेलू सुखपाळ म्हारी जोडी रा ढोला
मेडी रे चढती नै म्हांसू झालो सहियो नी जाय

कोरी कोरी गागर रे महाराजा मद भरी
आसा रो पियालो धण रे हाथ मीठा बोलो रा ढोला
मेडी रे चढती नै म्हासू झालो सहियो नी जाय

आप रे कारणिये हो मीठा मारू हवद भराऊ
झीलण रे मिस आय डावर नैणी रा ढोला
मेडी र चढती नै म्हासू झालो सहियो नी जाय

आपरे कारणिये हो बिलाला जी केळुडी बुवाऊ
दातणिये मिस आय हसलाहाली रा ढोला
मेडी र चढती नै म्हासू झालो सहियो नी जाय

आपरे कारणिये हो केसरिया जाजम ढळावू
बैठण रे मिस आय झोलालेणी रा ढोला
मेडी रे चढतो नै म्हासू झालो सहियो नी जाय

आपरे कारणियें हो आटोला जीमण दिराऊ

जीमण रे मिस आय पिवल प्यारो रा ढोला

मेडी र चढती नै म्हासू झालो सहियो नी जाय

मुझसे उनका यह झाला सहा नही जाता। अटारी चढती हुई को उन्होने झाला दिया। मुझ से यह झाला सहा नही जाता।

मेरे राजा, तुम्हे आता हुआ जानती तो दासी को स्वागत करने आग भेजती। मेरी जोडी के राजा, तुम्हे लान के लिए सुखपाल भेजती।

घोडो से घिरे हुए, मृगनयनी के ढोला ने मुझे झाला दिया, मुझ से झाला सहा नही जाता।

नई गागर मे मद भरा है। मीठा बोली के प्रेमी तुम्हारी प्रिया आसव का प्याला लिये खडी है।

अटारी पर चढ ही रही थी उन्होने झाना दिया। मुझ से झाला सहा नही जा रहा है।

मीठे मारू, तुम्हारे लिये पानी के हौज भराती हू। डावर नयनी के प्रियतम, नहाने का मिस कर आ जाना।

मुझ से उनका झाला सहा नही जाता।

बिलाला, तुम्हारे लिये कदली के पेड लगाऊगी। हस को सी चाल वाली प्रियतमा के प्रेमी, दातुन करने के बहाने चले आना।

अटारी पर चढती हुई को झाला दिया, वो मुझ से सहा नही जा रहा है।

केसरिया, आपके लिये जाजम बिछाऊगी झीना लेणी के प्यारे, बैठन के मिस यहा आ जाना।

सिगीजी परवाण मेले भन्डारी ने दीजो श्रो
शोरो नै सीसारी गाडी वैगी मेलो श्रो कै
लिखीया परवाणा हारै लिखीया परवाणा
गोळीया चादी री चाले श्रो कै लिखोया परवाणा ।

आउवा और आसोप दोनो ही मरुधरा के गले मे मोतियो की माला के समान वेशकीमती हैं । इन लोगो ने अग्रेजो के साथ युद्ध ठान लिया है ।

तालिया वाहर फेंको । ताले तोड डालो, शोरा बारूद (युद्ध की सामग्री) ताले तोडकर निकाल लो । अग्रेजो से युद्ध ठान लिया है, शाबाश ।

आउवा के वाग मे जोधपुर राज्य की सेना ने आकर डेरा डाल दिया है । अग्रेजो की फौजें भी आ गई हैं । दोनो मिलकर आउवा पर आक्रमण कर रहे हैं । भाईयो आउवा का साथ देना । ठाकुर का ठिकाना उसके पाव के नीचे से जा रहा है । तुम लोग ठाकुर का साथ दो । धन्य है । उसने अग्रेजो से युद्ध ठान लिया है ।

अग्रेजो की वडी करारी फौज आउवा को रौदने जोधपुर की फौज के साथ चढकर आई है जिसका एक सिरा तो जोधपुर के रातेनाडे पर है और दूसरा भाग आउवा मे नक्कारे बजाता जा घुसा है । फिर भी आउवा ने अपना झण्डा गाड दिया है । शाबाश, अग्रेजो की सेना के सिर काट कर अपना झडा गाड दिया है ।

आउवे के स्वामी, तेरा घोडा युद्ध मे वीरत्व के रग म रगा झलक रहा है । होली खेलने वाले आपसे अर्ज कर रहे है । आप हुक्म दें हमलावर के नक्कारे फोड दें । होली की गैर को युद्ध म बदल दें ।

जोधपुर की सेना के अधिकारी पत्र भेज रहे हैं कि वारुद की गाडिया जल्दी भेजो । चांदी की गोलिया चलेगी ।

मलजी

मोर बोले रे मलजी ग्राबू रा पहाडा में
मलजी मोर बोले रे

वेगा ग्राईजो रे मलजी सीरोही री धरती मे
मलजी वेगा ग्राईजो रे

ग्रासो पाइजे रे मलजी ग्रासो पाइजे रे
पीपळियें रा पाना मे मलजी वेगा ग्राइजो

ग्रावू रा ग्रमला मे मलजी वेगा ग्राइजो
सोने रो मादळियो मलजी किण रे घडायो ए

थारे घडायो ए गजवण थारे घडायो ए
मलजी वेगो ग्राइजे रे ग्रावू रा पहाडां मे
मलजी वेगो ग्राइजे रे

ढोल वाजे रे मलजी ग्रावू रा पहाड़ा मे
मलजी ढोल वाजे रे

भीकर नाचूं ग्रो मलजी टूटोडे ग्रांगणिये
मलजी थीकर नाचूं ग्रो

गाच बिछायदूं ए गजवण थारोड़े कारणिये
गजवण गाच जडायदूं ए

भल भल नाचूं रे मलजी काच रे आंगणिये
मलजी भल भल नाचूं रे

कीकर नाचू रे मलजी फाटोडे घाघरिये
मलजी कीकर नाचूं रे

घाघरियो मोलायदू ए गजबण जोधाणा रे चोवटिये
गजबण चू दडी मोलायदू रे

भल भल नाचू ओ मलजी भल भल नाचू रे
मलजी वेगो आईजे रे

मलजी, आबू के पहाड में मोर बोल रहे हैं।

सिरोही राज्य में मुझसे मिलने के लिए जल्दी आना। वहा मुझे मदिरा पिलाना, मलजी पीपल के पत्तो मे आसव पिलाना। मलजी, आबू के इलाके म जल्दी आना।

मलजी, यह सोने का मादळिया तुमने किसके लिए बनवाया है ?

गजब ढाहने वाली, तेरे लिये बनाया है, तेरे लिये।

मलजी, आबू के पहाडो मे शीघ्र आकर मिलना।

मलजी, कैसे नाचू ? इस टूटे हुए आगन मे कैसे नाचू ?

गजब ढाहने वाली, काच जडा दू, तेरे आगन मे काच।

मलजी, फिर तो मैं वार बार नाचूगी। काच जडे आगन मे खूब नाचूगी।

मलजी, यह फटा हुआ घाघरा पहन कर कैसे नाचू ?

गजब ढाहने वाली, तेरे घाघरा बनवा दू, जोधपुर के चौहट्टे से चूदडी खरीद कर लादू।

मलजी, तब तो मैं नया घाघरा और चूदडी पहिन कर खूब नाचूगी।
मलजी, आबू के पहाड मे आकर मुझसे जल्दी मिल।

भीला राणां

भीला राणा आबू रे जावे तो रे
म्हारे काची ने पाको कैरी लाव रे
हा केरी लाव रे आवूडे जावे तो रे।

भीला राणा आवूडो देवता रो रे
ओ तो भाखरियो भील दोरो रे
हा भाखरियो भील दोरो रे
भीला राणा आवूडो देवता रो रे

भीला राणा आबू रे चढती रे
म्हारा पगलिया धूजण लाग्रिया रे
हा धूजण लागिया रे
भीला राणा आबू रे चढती रा

भीला राणां थारी ने सूरत रो
म्हने रातयू' सपनो आयो रे
हा सपनो आयो रे
भीला राणां थारी ने सूरत रो

भीला राणां आवूडे जावे तो रे
म्हारे काची पाकी केरी लाव रे।

मेरे भील राजा, आवू पहाड पर जाओ तो मेरे लिये कच्चे पक्के आम लाना।

हा, आवू जाओ तो आम लाना मेरे लिये।

मेरे भील राजा, आवू पर तो देवताओ का निवास है। पर्वत पर चढना बडा कठिन है, हा, आवू की चढाई कठिन है। पहाड पर चढते चढते मेरे पाव कापने लग गये।

हा, पाव धूज रहे है।

मेरे भील राजा, रात को मुझे तुम्हारा सपना आया, हूबहू तुम दिखाई दिये।

पहाड से तुम मेरे लिये कच्चे पक्के आम लेते आना।

* आवू पहाड पर और उसके आसपास भील तथा गिरासिया जन जाति बसी हुई है। आवू पहाड पर आम कसरत से पैदा होता है। ,न तथा वन वृक्ष ही इन जन जातियों के भरण पंषण के आधार हैं। जन जातियों के गीत प्राय वन, फल, वृक्ष, पक्षियो तथा प्रकृति से अधिक सम्बन्धित रहते हैं।

चिरमी

चिरमी म्हारी चिरमली
चिरमी रा डाळा चार
भोळी म्हारी चिरमी रा
ऊचले डाळे म्हे चढू
नीचले डाळे जेठ
भोळी म्हारी चिरमी रा
याई ऊचलो डाळो ढेह पडयो
लागी म्हारा चूडलिया रे चोट
भोळी म्हारी चिरमी रा
उतरो जेठ जी म्हे चढूं
जोवूं म्हारे बावोसा री वाट
भोळी म्हारी चिरमी रा
भागलो भागलो बाबोजी
बारे लारै रे बडोडो वीर
भोळी म्हारी चिरमी रा
म्हारे बावेजी रे चढण ने घोडलो
म्हारै वीरेसा रे चढण ने टोट
भोळी म्हारी चिरमी रा
म्हारे घोडले रे बांधण ने घूघरा
टोडण रे बांधण ने मूम

मोळी म्हारी चिरमी रा
रमझम वाजे घूघरा
लूम लचरका खाय
भोळी म्हारी चिरमी रा
काट भरीजे लूम
भोळी म्हारी चिरमी रा
बुकचे मे राखू घूघरा
खू टी रे टगा दू लूम
भोळी म्हारी चिरमी ए
दही सू मजादू घूघरा
झटके झाडू लूम
भोळी म्हारी चिरमी ए

मेरी चिरमी का पेड मेरी चिरमी ।

मेरी चिरमी के पेड के चार डालिया है । ऊपर ही ऊपर के डाल पर मै चढी अपने पिता को आते हुए देखने । नीचे वाली डाल पर जेठजी चढे । ऊपर की डाल टूट पडी । मेरे चूडले के चोट लग गई ।

मेरी चिरमी बडी भोली है ।

जेठजी, तुम उतरो, मैं चढूगी । मेरे पिता का मार्ग देखूगी । वह देखो, मेरे पिता आ रहे हैं । आगे आगे पिता, पीछे पीछे मेरा बडा भाई ।

पिता घोडे पर सवार हैं, भाई ऊट पर । घोडे के घुघरू बधे है, ऊट के लूब लटक रही है ।

झम झम घुघरू बज रहे हैं, लूब लहरा रही है ।

घुघरू के जग चढ जाता है, लूब धूल से भर जाती है मैं बुकचे के अन्दर घुघरू रखूगी खूटी ऊपर लूब टाग दूगी ।

दही से माज कर घुघरू ऊजले निकाल दूगी । लूब को झडका कर साफ कर दूगी ।

खेलण दो गणगौर

भवर म्हाने खेलण दो गणगौर
म्हारी सैया जोवे वाट
ओ भवर म्हाने खेलण दो गणगौर
कै दिन री गणगौर थाके
कै दिन री गणगौर
जो थाने कतरा दिन रो चाव
ओ भवर म्हाने खेलण दो गणगौर
दस दिन री गणगौर ओ भवर
म्हारे दस दिन री गणगौर
जी म्हाने सोळा दिन रो चाव
ओ भवर म्हाने खेलण दो गणगौर
नही जावा दा सारी रात ओ सुन्दर
थाने नही जावा दा सारी रात
जी म्हारा म्हेला री रखवाळ
सुन्दर थाने नही जावा दा सारी रात
घडी दोय जावा दो भवर
म्हाने घडी दोय जावा दो
जी म्हारी सासु सपूती रा जोध
ओ भवर म्हाने खेलण दो गणगौर
म्हारी सैया जोवे वाट ओ पना मारू

म्हारी सैया जोवे बाट
म्हारा आलीजा रो जलल सुभाव
ओ भंवर म्हाने खेलण दो गणगौर
म्हारी रात रिझावण दिन बतळावण
जावा नी दू सारी रात
म्हारी सैया जोवे बाट
ओ भवर म्हांने खेलण दो गणगौर

भवर, मुझे गणगौर खेलने जाने दो। मेरी सहेलिया बाट देख रही है। मुझे गणगौर खेलने जाने दो।

कितने दिनो की गणगौर है ? तुम्हे कितने दिनो का चाव है ?

दस दिनो की गणगौर है, सोलह दिनो का चाव है। भवर मुझे गणगौर खेलने जाने दो।

सुन्दरी, सारी रात के लिए मैं नही जाने दूगा। तू मेरे महलो की रखवाली करने वाली है, सारी रात नही जाने दूगा।

दो घडी के लिये मुझे जाने दो। मेरी सपूती सास के जोधा, सहेलिया, प्रतीक्षा कर रही है। मुझे दो घडी के लिये जाने दो। मुझे गणगौर खेलने का चाव है। और मेरे भवर का तेज मिजाज है। मुझे जाने नही देते।

रात को रिझाने वाली और दिन का बातो मे बहलाने वाली, तुम्हे सारी रात के लिये नही जाने दूगा।

मुझे गणगौर खेलने जाने दो। सहेलिया प्रतीक्षा कर रही है।

ढोला थांरो किलो

ढोला थारो किलो कतरीक दूर
आती जाती हारी म्हारा सरदार
गोरी म्हारो किलो कोस पचास
पालकी बैठी आवो राणांजी री नार
ढोला थांरो पिछोला रो पांणी घणो दूर
तिरस्या मरती हारी म्हारा सरदार
गोरी थारे आगण होद खुदावू
तिरस्यां क्यूं मरो थे राणाजी री नार
ढोला थारे आगण मच रह्यो कीच
म्हाने गोद्या ले चालो म्हारा सरदार
गोरी भाई भतीजा म्हारी लार
लाज्या मत मारो घर री नार
ढोला म्हारा कीच भरिया रमझोळ
सग किसा चालू म्हारा सरदार
गोरी थारा बाळा कूंचो धोवू रमझोळ
दुपट्टा सू पूंछू ए थारा पाव

प्रिय, तुम्हारा किला कितनी दूर है, मैं तो आते आते थक गई।

यहा से मेरा किला पचास कोस है। तुम घबराती क्यो हो? राणाजी की रानी, पालकी पर सवार हो चलो।

तुम्हारे पिछोले ताल्लाव का पानी बहुत दूर है। मैं तो प्यास मर गई।

तुम्हारे आगन मे होद खुदवा दूगा। सुन्दरी, प्यास क्यो मरोगी।

प्रिय तुम्हारे आगन मे बरसात का कीचड हो रहा है। मुझे अपनी गोद मे उठा लो।

भाई भतीजे साथ मे हैं। मुझे लाज आती है।
कीचड से मेरे पैरो के पाजेब भर गये, मैं साथ कैसे चलू।

बाळा कूची अर्थात् ब्रुश से तुम्हारे पाजेब धो दूगा। दुपट्टे से पाव पोछ दूगा।

नोट—सूअर के गर्दन के बालों से जेवर साफ करने का ब्रुश बनाया जाता है उसे "बाला कूंचो" कहते हैं।

लाडो बेटी जाय घरां

मेरो परिंडो रीतो ओ बावल
कुण भरेगो थारी धीय बिनां
थारी भाभिया भरेगी परिंडो
लाडो वेटी जाय घरा

गोबर गुवाडे पसरयो ओ बावल
कुण उठावेगो थारी धीय बिना
थारी भाभिया उठावे गोबर
लाडो बेटी जाय घरा

म्हारी गाया बधी छं ठांए
कुण खोलेगा बावल थारी धीय बिना
थारो भाई खोलेगा गाया
लाडो बेटी जाय घरा

म्हेरो दही पड्यो बिना विलोया
कुण विलोवेगा बावल थारी धीय बिना
थारी भाभिया दही बिलोसी
लाडो बेटी जाय घरा

मेरां बाच्छा रमे छे ठांए
कुण चूंगावेगा बावल थारी धीय बिना

भारी भाभिया चू गासी वाछड़ा
लाडो बेटी जाय घरा

मेरो कुण लावेगा घास
ओ बाबल थारी धीय विना
थारो भाई लावेगा घास
लाडो बेटी जाय घरा

म्हेरो कुण करेगो रसोई
ओ बाबल थारी धीय बिना
थारी भाभिया करेलो रसोई
लाडो बेटी जाय घरा

म्हेरो कुण खिलावेगो भतीज
ओ बाबल थारी धीय बिना
थारी भाभी खिलावे बाळक्यो भतीज
लाडो बेटी जाय घरा

थनें बाबल कुण केवेगो
ओ बाबल थारी धीय विना
आसू तो भर आया नेंणा मे
ओ लाडो बेटी जाय घरा

बाबुल, मैं ससुराल चली जाऊगी तो तुम्हारे पानी कौन भरगा मेरे बिना।
बेटी, तेरी भोजाईया भरेगी। लाडो बेटी, तू जा अपने घर।

बाबुल, गुवाडे मे गोबर फैला रहेगा। तुम्हारी बेटी बिना कौन उठायेगा?
लाडो बेटी, तू जा अपने घर। तेरी भाभी गोबर उठायेगी।

बाबुल गायें ठाणो मे बधी है उन्हे तुम्हारी बेटी बिना कौन खोलेगा?
तेरा भाई खोलेगा। तू जा लाडो बेटी, ससुराल जा।

दही बिन बिलोये पड़ा रह जायगा बाबुल। तुम्हारी बेटी बिना कौन दही बिलोयेगा ?

तेरी भोजाई बिलोयेगी। लाडो बेटी, अपने घर जा।

बछड़ों को कौन दूध पिलाने छोड़ेगा तुम्हारी बेटी बिना ?

तेरी भाभी बछड़ो को दूध पीने छोड़ेंगी। लाडो बेटो, तू घा।

बाबुल, तुम्हारी बेटी बिना घास कौन लायेगा ?

तेरा भाई घास लायेगा। लाडो बेटी, तू जा अपने घर।

बाबुल, तुम्हारे लिए खाना कौन बनायेगा, मैं चली जाऊंगी तो ?

बेटी, तेरी भौजाइया खाना बना लेंगी। तू जा मेरी लाडो बेटी।

भतीजे को कौन खिलायेगा ?

बेटी, तेरी भौजाइया भतीजे को खेलायेगी। लाडो, तू जा।

बाबुल, और सभी काम तो वे कर लेंगी पर, तुम्हे बाबुल कह कर कौन पुकारेगा।

बाबुल के आखो मे आसू भर आये। लाडो बेटी, अपने घर जा।

करहला

प्यारा लागै काळा करहला
वाल्हा लागै धोळा बैल
कासू कमावै म्हारा काळा करहला
कासू कमावै धोळा बैल
खेत कमावै म्हारा काळा करहला
कुवै चालै धोळा बैल
प्यारा लागै म्हारा काळा करहला
वाल्हा लागै धोळा बैल
कै उपजावै, म्हारा काळा करहला
कै उपजावे धोळा बैल
काकडी मतीरो काळा करहला
गाजर मूली म्हारा धोळा बैल
प्यारा लागै काळा करहला
वाल्हा लागै धोळा बैल
कुण चरासी काळा करहला
कुण चरासी धोळा बैल
मारूजो चरासी काळा करहला
धण नीरसी धोळा बैल
प्यारा लागै काळा करहला
व्हाला लागै धोळा बैल

काले ऊंट बड़े प्यारे लगते हैं। सफेद बैल भी बहुत अच्छे लगते है।

काले ऊंट क्या काम करते है, सफेद बैल क्या करते हैं।

ऊट खेत मे कमाई करते है, बैल कुए से पानी निकालते है।

काले ऊंट सफेद बैल बड़े प्यारे लगते है।

काले ऊंट खेत मे क्या पैदावारी करते हैं, सफेद बैलो से क्या निपजता है।

काले ऊट काकडी मतीरा पैदा करते हैं मेरे सफेद बैल गाजर मूली पैदा करते हैं।

काले ऊंट और सफेद बैल बडे प्यारे लगते हैं।

काले ऊंटो को कौन चरायेगा। सफेद बैलो को कौन चरायेगा।

पति काले ऊटो को चराने ले जायेगा। पत्नी सफेद बैलो को घास डालेगी।

काले ऊंट और सफेद बैल मुझे बड़े प्यारे लगते है।

चौपड़

चौवारा मे मडियो ख्याल रा काई
चौपड ने खेले ओ मोटा राजवो
आई आई साईना नै रीस रा काई
गोरा गाला पै दीधी थाप री
पतळी कमर पै दीधी लाप री
आई आई मारूजी ने रीस रा काई
थांरा मेहला मे नही रेवस्या
थारी सेजा मे नही पोढस्या
उठ ए छोरी म्हेला दीवलो जोव रा काई
कागद नै लिखस्या मोटा बाप रे
बाईसा दिवले नही तेल रा काई
चादा रे उजाळै कागद माडस्या
ओळु दोळु लिखिया सलाम रा काई
अधविच लिखिया द दोसा रे ओळमा
खडियो राईको कोस पचास रा काई
दिनडो उगायो बावोसा रा देस मे
वेठया बावोसा दलीचो विछाय रा काई
कागद ने सूप्यो ओ दादोसा रे हाथ मैं
आई आई बावासा नै रीस रा काई
फौजा ने सिणगारो बेना बाई रा देस मे

हाथीडा सिरागारया हजार रा काई
घुडला तो लीधा पूरा पाच सौ
खडया खडया कोस पचास रा काई
डेरा तो दीधा वैना वाई रा देस मे
धडक्या धडक्या साईना रा लोग काई
म्हेला मे धडक्यो ग्रालीजा रो काळजो
सेजा मे धडक्यो सोकडल्या रो साथ
थाने घडादद्‌ गौरी लाख मोहर रो हार रा काई
थारा दादोसा री फौजा फेर दो
वाळू झाळू लाख मोहर रो हार रा काई
म्हारा गोरा गाला पै मारी थाप री
म्हारी पतळी कमर पै मारी लात री

चौवारा मे चौपड खेलने मोटे रावजी ग्रपनी रानी के साथ बैठे, खेलते खेलते क्रोध ग्रा गया। उसने गौरी के गौरे गालो पर थप्पड मार दी। पतली कमर पर लात मार दी।

गौरी को क्रोध ग्रागया। उसने कहा, मैं ग्रापके महलो म नही रहूगी। दासी से कहा, उठ दीपक जला। ग्रपने प्रतापी पिता को पत्र लिखती हू।

दासी बोली, दिये मे तेल नही है।

रानी चाद के प्रकाश मे ही पत्र लिखने बैठ गई।

इधर-उधर सलाम लिखे। बीच म भाई को उलाहना।

राइका फुर्ती से पचास कोस चला गया। उसने दिन रानी के पीहर मे जा उगाया।

रानी के पिता अपने मुसाहिबों से घिरे गलीचे पर बैठे थे।

उसने पत्र ले जाकर भाई के हाथ मे दिया।

पत्र पढते ही पिता क्रोधित होकर बोले, अपनी बहिन की ससुराल पर सेना चढाकर जाओ।

हजार हाथी और पाच सो घोडे लेकर पचास कोस की मजिल तय की और अपनी बहिन के राज्य मे डेरा डाला।

उसका पति और सौतें घबरा उठी। आदमियो मे खलबली मच गई।

गौरी ! तुम्हे लाख मोहर का हार दूंगा। अपने भाई की फौजें वापिस लौटा दो।

तुम्हारे लाख मोहर के हार मे आग लगे। मेरे गौरे गाल पर तुमने थप्पड मारी थी। मेरी पतली कमर पर लात मारी थी।

ओलमो

थारो ढोला भूलणो सभाव
थांरो पिया भूलणो सभाव जी
पिया प्यारी नें भूल्या ना सरे जी म्हारा राज ।

छोडो पिया साथिडा रो साथ
साथिडा छोड़्या ना सरै जी म्हारा राज ।

छोडो ढोला सहेल्या रो साथ
सहेल्या छोड़्या ना सरै जी म्हारा राज ।

जाज्यो ढोला गढ गुजरात
बावडतो ल्याजो केवडो जी म्हारा राज ।

जाज्यो ढोला सूरा री सिकार
थावडतो ल्याजो मृगला जी म्हारा राज ।

भीजें ढोला तवूडा रा बांस
रग रस में भींजे डोरिया जी म्हारा राज ।

पिया, तुम्हारा स्वभाव भूलक्कड है ।

अपनी प्यारी को कैसे भुलाया जा सकता है ।

अपने साथियो का साथ छोडो ।

साथियो का साथ नही छोडा जा सकता । प्रिय, तुम अपनी सहेलियो का साथ छोड सकती हो ?

सहेलियो का साथ नही छोडा जा सकता ।

ढोला, तुम गुजरात जा रहे हो तो लौटते हुए केवडा के फूल लेते आना ।

ढोला, सूअरो की शिकार जाओ तो लौटते हुए मृग लेते आना ।

तुम्हारे तबूओ के बास भीग रहे हैं ।

रग रस मे तबू की डोरें भीग रही है ।

आलीजो

प्यारा लागो आलीजा जी,
था विन घडियन आवडै रे
आलीजा थारो सिकारी जीव
म्हारो तो झरोखा रो झाकणो रे
आलीजा जी, धोळे घोडे असवार
रातडली डाडी रो सोवन चावुको रे
आलीजा दाखा रो वगलो छवाव
थारी तो वैठक म्हारो खेलवो रे
आलीजा आप छो हजारे रो फूल
प्यारी जी कळी छै कचनार री
आलीजा आप छो मखमल री म्यान
प्यारी जी तेग तरवार की रे लो

आलीजाह, तुम बडे प्यारे लगते हो। एक घडी भी तुम्हारे विना अच्छी नहीं लगती।

तुम्हारी तो शिकारी की आदत है। मेरा झरोखे से झाकना होना है।

सफेद घोडे पर सवार, लाल रग की डाडी का सुवर्ण चावुक उनके हाथ म है।

आलीजा, दाखों का वगला (कु ज) वनवाओ।

तुम्हारी वहाँ बैठक होगी। मैं सैर के लिये जाऊगी।

तुम हजारे का फूल हो तो मैं कचनार की कली हू।

आप मखमल की म्यान है तो मैं तेज तलवार हू।

बायरियो

धीमो-मधरो वाज रे बायरिया,
सैणा रा बायरिया धीमो-मधरो वाज ।

जिण दिस बसै म्हारा सायबा, उण दिस आवै ठंडी लेर
बायरिया सैणा रा बायरिया,
धीमो-मधरो वाज

साजन आया पावणा रे, कई करू मनवार रे
बायरिया सैणा रा बायरिया धीमो मधरो वाज

तन री सजाऊ तासळी रे, मनडे री करू मनवार रे
बायरिया सैणा रा बायरिया धीमो मधरो वाज

साजन चाल्या चाकरी रे, खाधे धर न बदूक रे
बायरिया सैणा रा बायरिया धीमो-मधरो बाज

के तो साथे ले चालो रे नी तो कर देवो दो टूक रे
बायरिया सैणा रा बायरिया धीमो-मधरो वाज

काजळ सू भरिया नैण रे, मेदी सू भरिया दोऊ हाथ रे
बायरिया सैणा रा बायरिया धीमो-मधरो वाज ।

पवन, धीमे धीमे बहो। जिस दिशा मे मेरा प्रिय बसता है उस दिशा से पवन भी शीतल आती है।

प्रियतम, घर आये हैं उनकी मनुहार कैसे करूं। क्या करूं ?

तन की तश्तरी मे मन को रख कर मनुहार करूंगी।

पवन धीरे धीरे बह।

सजन फिर से चाकरी पर जाने को तैयार है। कंधे पर बंदूक रखली है।

या तो मुझे साथ ले चलो अन्यथा मेरे शरीर के दो टुकडे कर डालो।

काजल से मेरे नयन भरे हैं, दोनो हाथो के मेहदी लगा रखी है और तुम जाना चाहते हैं।

पवन धीमे धीमे बह।